मासिक

मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख पूर्ण अंक २२२ जनवरी-२०२६
Volume no. 18, Issue No. 222 January 2026

समैयो

विजय स्तंभ
स्थापना महोत्सव
पत्रिका लेखन

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

सम्प्रदाय के प्रसिद्ध कालुपुर मंदिर की खरमास की धून में प्रात: हजारो भक्तो के साथ धून करते पू. महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री।

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर से-२३ के पाटोत्सव पर पुस्तक विमोचन करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री।

कोडकी (कच्छ) मंदिर में पाटोत्सव पर ठाकुरजीकी आरती उतारते प.पू. आचार्य महाराजश्री।

समैयो के अवसर पर प.पू. गादीवालाश्री के सांनिध्य में कालुपुल मंदिर मे एकादशी सत्संग सभा में हजारो महिला हरिभक्तोने लाभ लीया था।

समैयो के अवसर पर प.पू. गादीवालाश्री के संकल्प से जमीयतपुरा मंदिर में यज्ञ में समिध होम करते पू. श्रीराजा के साथ हजारो बहने।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १९ ● अंक : २२२ ● जनवरी-२०२६

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	''समैयो'' के उपलक्ष्य में शिक्षापत्री	०६
०४.	श्रीहरि के ६वे, ७वे और आठवे वंशज के मुख से अमृतवचन	०७
०५.	श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से	१३
०६.	भक्ति सुधा	१९
०७.	''समैयो'' के उपलक्ष्य में	२३

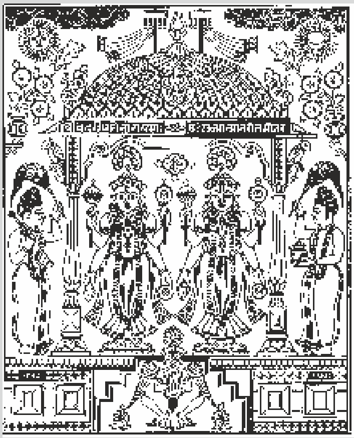

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७, २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail :
magazine@swaminarayan.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

अस्मदीयम्

प्रिय भक्तो,

भले ही इस मास को खरमास माना जाता है। लेकिन भगवान के भक्तो के लिये। यह भजन-भक्ति साधना का महीना है। प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में जल्दी उठकर मंदिर में खरमास की धुन एक अलौकिक पर्व बना है। अपने भजन-भक्ति की बैटरी चार्ज हो जाती है। यहाँ के निज मंदिर में सभा मंडप सूक्ष्म लगता है। यहाँ पाँच वर्ष के बालक से लेकर ८० वर्ष के भक्तगण धुन से अविभूत हो जाते है।

अपने ''समैयो'' की तैयारी के रुप में विजय स्तम्भ ध्वजा रोहण का कार्यक्रम पर्व ग्राउन्ड पर भव्यरुप से स्थापित किया गया। धर्मकुल के करकमलो द्वारा आमंत्रण पत्रिका लिखी गयी। उसके वितरण का उत्सव भी मनाया गया। अब ''समैया'' का उत्सव ता. २३ जनवरी २०२६ आने वाला ही है। ''समैयो'' की जगह के उपर हरिभक्तो ने सेवा की अनेक प्रवृत्तियों मे जुट गये है। प्रतिदिन प.पू. महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के मार्गदर्शन अनुसार तीव्रता से चल रहा है।

श्रीजी महाराज आज से २०० वर्ष पहले धर्म की स्थापना के मंदिरो तथा मंदिरो की आवश्यकता पूरी की शिक्षापत्री का यह शास्त्र चिरकाल तक स्थायी रहेगा।

परब्रह्म पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण इस पृथ्वी के उपर जीवो के कल्याण के लिये प्रगट हुए थे। धर्म संस्थापन महाराज ने हम सभी को धर्मवंशी आचार्य, संत, शास्त्र, मंदिर दिये है।

शिक्षापत्री, वचनामृत, सत्संगिजीवन, सत्संगिभूषण जैसे का प्रतिदिन पाठ करने की आज्ञा दिये है। प्रतिदिन करने से महाराज के वाणी स्वरुप में आते रहते है। इनके आदेशो को प्रतिदिन याद करके ऐसा जीवन व्यतीत कर सकते है। चित्त शुद्धि के दोष से बंधे रहते है।

अपने संप्रदाय की पुष्टि, सम्प्रदाय के ग्रन्थो द्वारा होता है। ''शिक्षापत्री'' सभी शास्त्रो का सार महाराजने दिया है। यह सम्प्रदाय को अनंतकाल तक बना रहा है।

अपनी प्यारी शिक्षापत्री के जन्म का २०० वर्ष का उत्सव ''समैयो'' मनाना अपने भाग्य में आया है। तो तैयार होकर अति उत्साह आनंद से ''समैयो'' से हम जुड जाये। अर्थात् हम परमकृपालु परमात्मा के साथ जुडेगे। ''समैयो'' के महामहोत्सव में परिवार के साथ कंकोत्री की राह देखे बिना। लगातार पाँच दिन अवश्य जाये।

इसी उद्देस्य पूर्वक सभी को मेरा जयश्री स्वामिनारायण।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा (डिसम्बर-२०२५)

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर साबरवाड (ईडर प्रदेश) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा पर पधारना ।

११ श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटेरा मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा पर पधारना ।

१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर अडालज मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा पर पधारना ।

१४ ''समैयो'' के अवसर पर विजय स्तम्भ स्थापना अपने करकमलो द्वारा पूर्ण करना ''पर्व ग्राउन्ड'' ।

१५ शिक्षापत्री लेखन के २०० वर्ष के ''समैयो'' महामहोत्सवकी आमंत्रण पत्रिका लेखन परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में स्वयं के करकमलो से पूर्ण किये । संत महादीक्षा विधी भी अपने करकमलो से पूर्ण किये ।

१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर ओला के पाटोत्सव पर पधारना ।

२० खरमास धुन में कालुपुर मंदिर पर पधारना ।

२२-२३ नारायणपर (कच्छ) श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव पर पधारना ।

२६ श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर शिक्षापत्री कथा के अवसर पर (से-२३) में पधारना ।

२७-२८ कोटकी (कच्छ) श्री स्वामिनारायण मंदिर में पधारना ।

२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर उवारसद के पाटोत्सव पर पधारना ।

३० श्री स्वामिनारायण मंदिर मेउ में शाकोत्सव पर पधारना ।

३१ एकादशी श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में धुन पर पधारना ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (डिसम्बर-२०२५)

६ श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया (रामबाग) शाकोत्सव पर पधारना ।

१४ ''समैयो'' के उपलक्ष्य में विजय स्तम्भ स्थापना अपने करकमलो द्वारा पूर्ण करना ''पर्व ग्राउन्ड'' ।

१५ शिक्षापत्री लेखन के २०० वर्ष के ''समैयो'' महामहोत्सवकी आमंत्रण पत्रिका लेखन परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में पूर्ण हुआ ।

१६ जेतलपुरधाम द्विशताब्दी महोत्सव की आफिस के उद्घाटन पर पधारना ।

२० श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका में शाकोत्सव पर पधारना ।

२१ श्री स्वामिनारायण मंदिर विसनगर नूतन मंदिर शिलान्यास और शाकोत्सव के अवसर पर पधारना ।

२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर उत्सव की मीटींग में पधारना ।

२७ लूणावाडा श्री स्वामिनारायण मंदिर शाकोत्सव पर पधारना ।

२८ महेसाणा श्री स्वामिनारायण मंदिर शाकोत्सव पर पधारना ।

कृष्णास्तदवताराश्च ध्येयास्तत्प्रतिमापि च ।
न तु जीवा नृदेवाद्या भक्ता ब्रह्मविदो ऽपि च ॥११५॥

अनुवाद : श्रीकृष्ण भगवान तथा कृष्ण भगवान के जो अवतार ध्यान करने योग्य है। तथा श्री कृष्ण भगवान की जो प्रतिमा, वह भी ध्यान करने योग्य है । इस लिये इनका ध्यानक रना और मनुष्य तथा देवादिक जो जीव है । वे यदि श्रीकृष्ण भगवान के भक्त हो या ब्रह्मवेत्ता हो तो भी ध्यान करने योग्य नही है। इस लिये उनका ध्यान नही करे ॥११५॥

विवेचना : मुमुक्षुध्येय तत्व श्रीकृष्ण के अलावा नही होना चाहिए । यहाँ पर इसकी स्पष्टता की गयी है । श्रीकृष्ण भगवान तथा उनेक अवतारो और धातु या अश्ममयी ऐसी प्रतिमा के अलावा अन्य मनुष्य या देव का ध्यान नही करे । ध्यान के शुभ आशय परमात्मा के अलावा कोई नही है । तद् अवताश्य यह शब्द ध्यान खींचता है। इसका समास देखे तो स अवतारो यस्य सः । श्रीकृष्ण है । अवतार जिनका ऐसे पुरुषोत्तम स्वामिनारायण सर्व अवतारो के अवतारी उनका ध्यान करना। यह अर्थ समास से उत्पन्न होता है।

इसी प्रकार कोई प्रतिमा जिसकी स्थापना भगवान किये हो। या भगवत स्वरुप आचार्यश्री किये हो तो उसका ध्यान करे। अन्य किसी उपलब्ध प्रतिमा की नही, अर्थात् जिस प्रतिमा की प्रतिष्ठा शास्त्र के अनुसार श्रीहरि के अपर स्वरुप आचार्य श्री स्थापित किये हो तो ध्यान करना चाहिए।

श्लोक की दूसरी पंक्ति में एक महत्वपूर्ण बात कही गयी है । मनुष्य कितना बड़ा ब्रह्मवेत्ता हो तो भी उसका ध्यान नही करना चाहिए । क्योकि उसमें अवतार भाव था भगवद् रुप का भाव नहि रख सकते है। मनुष्य मात्र भगवान का अंश है। यह अलग बात है। मानव की ईश्वर सम पूजा यहाँ पर निषेध है। उसका भगवान के रुप में ध्यान नही कर सकता है। सम्मान दे लेकिन ध्यान नही करना चाहिए। भगवान शौनक कहते है :-

संसार में प्राणी कर्म के फल रुप में जगत में आते है। तथा जाते है। इस लिये वे ध्यान के लिये निषेध है। भगवान के परिचर्या में रहा तो वह ध्यान विषयक हो सकता है । इसमें दोष नही है। क्योकि भगवान की परिचर्चाकरता हो तो वह उस रुप में भगवान के साथ आता है। नित्यमुक्ता आदि का भगवत् विशेषष्य होने से उपास्य निषिद्ध नही होता है । गुण विशिष्ट और विभूतिविशिष्ट ऐसे परब्रह्म की उपास्य शास्त्रो में वर्णित है।

संक्षेप में कहे तो अपने आराध्य देव प्रगट पुरुषोत्तम भगवान स्वामिनारायण का ध्यान करना सबसे हितावह है। उनकी प्रतिमा तथा अवतारो को ध्यान करे। शेष का ध्यान नही करे। लेकिन व्यवहारिक रुप में आदर-सम्मान सत्कार कर सकते है। इस प्रकार इस श्लोक का भावार्थ है।

श्रीहरि के ६वे, ७वे और आठवे वंशज के मुख से

अमृतवचनो

– संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

असारवा वीर हनुमानजी दादा का १७५ वाँ वर्ष शतामृत पाटोत्सव के अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री, ता. ९-१०-२०२५ : अधिक समय से जिस प्रसंग की राह देख रहे है । हनुमान दादा के सानिध्य में, १७५ वर्ष यहाँ पर विराजमान ऐसे वीर हनुमानजी महाराज की स्थापना किये । इसकी महिमा बताना चाहिए । तो शायद पाँच दिन भी कम पड जाये ।

स्वामिनारायण भगवानने अपने उपर कृपा करके अपने ही कुल देवता उनकी अहमदाबाद में अलग-अलग क्षेत्र में जब अयोध्याप्रसादजी महाराजने स्थापना की है । अहमदाबाद देश के बड़े बड़े अवसर मनाये जाते है । औऱ अभी बडा प्रसंग ''पर्व'' इसके बाद ''आचार्य वंदना'' ये दो बडे प्रसंग जो जमीयतपुरा हनुमानजी महाराज के पास किया गया । और अब ''समैयो'' यह भी उसी स्थान पर किया जायेगा । जो भी उत्सव समैया, या कोई प्रसंग अहमदाबाद देश में निर्विधन एवम् अच्छे तरह से पूर्ण होता है । उस सभी का श्रेय हनुमान दादा को जाता है । क्योकि साक्षात् रुप में रहकर रक्षा करते है । इस सम्प्रदाय के लिये इस सत्संग के लिये हरिभक्तो के लिये, संतो के लिये, साक्षात् रुप से रहकर जब रक्षा कर रहे है । तब अपना कर्तव्य बनता है । इनके लिये जो करते है । वह कम ही है । हम सभी कभी भी भगवान का प्रभाव समाप्त नही कर सकते है । तो १७५ वर्ष हनुमानजी दादा का हुआ है । अपने शक्ति के अनुसार जो सेवा कर सकते है करे । जीर्णोध्धार करके सरस एक मंदिर रहे । हरि भक्तो की व्यवस्था हो । उसकी चर्चा हो रही है । यह प्रोजेक्ट अल्प समय में आप लोगो के सामने आयेगा । इसमें भी जुडकर सभी हरिभक्तो को सहयोग करना है ।

अंत में शा. स्वामी निर्गुणदासजी स्वामीने सम्प्रदाय में नरनारायणदेव द्वारा की गयी सेवा को प्रशंसा किये है । वीर हनुमानजी महाराज का आगामी २०० वर्ष का उत्सव आये वहाँ तक उसकी शरीर स्वस्थ रहे । ऐसी प्रार्थना के साथ कहे थे । अपने संत और हरिभक्त ये अपनी पूंजी है । अहमदाबाद देश में एकता है । औऱ प्रेम भी है । इस लिये विकास है । जो परिवार और लोगो के बीच भी नही है । विशेष प्रेम यहाँ के संतो और हरिभक्तो में है । यह सब से बडी अपनी पूँजी है । यह प्रेम भाव बचाकर रखना है । इससे विकास होगा । यह यदि कम हुआ तो अपनी वृद्धि रुक जायेगी । इस एकता को बचाकर रखना है ।

सभी के मध्य संत और हरिभक्त के मध्य प्रेम और एकता रहे । भगावन के प्रति श्रध्धा औऱ आत्मियता स्थाई रहे । ऐसी हनुमामजी के चरणो में प्रार्थना करके यजमान परिवार के साथ सभी को आशीर्वाद दिये थे ।

प.पू. बड़े लालजी महाराजश्री, ता. ११-१०-२०२५ : आदरणीय संतो और प्रिय सत्संगि भाईयो, इस स्थान पर जब मै आता हूँ । तब पुराने स्मृति मन में आ जाती है । मेरा भी जन्म यही पर हुआ है ।मै ३० से ३५ वर्ष तक रहा हूँ । खाये, खेले, क्रिकेट खेले, पतंग उडाये है । फटाकडा फोडे है । सब बात याद आ जाती है । यहाँ पर (बापुजी) के लिये घोडा रखते थे । इसमें माणकी का भी वंश था । अन्तिम वंश था । उसके उपर मै बैठता था । घोडे का नाम चेतक था । घोडा को लेकर कैम्प में जाता था । यह भी याद है ।

यह हनुमानजी है । यहाँ पर प्रति काली चौदश को बापूजी पधारते थे । आरती और उत्सव मनाते है । अमरा भगत नाम के एक हनुमानजी के पूजारी थे । उनका कमरा बगल मे था । उस समय हुलड का समय था । मोदी साहब के आने बाद हुल्लड बंद हो गया । शेष वर्ष में २ से ३ बार

हुलड तूफान में कर्फ्यु चलता था । किसी जगह पर आग लग जाती थी । एक बार आग लग जाने से हमारे घर की बिजली बंद हो गयी थी । तार सुलग गया था । पानी आना बंद हो गया था । कारपोरेशन का पानी घर में नही आ रहा था । दो दिन यहाँ पर स्नान करने आये थे । यहाँ की कई यादे है।

हनुमानजी के पास से हमे क्या सिखना है ? तो पतिव्रता की भक्ति सिखनी है । यह महाराजने हम सभी को बताये है । दूसरा जब भूत-प्रेत का प्रभाव आये तो इसका सहारा लेना है । शुद्ध देवो का सहारा नही लेना है । यह महाराजने शिक्षापत्री में स्पष्ट लिखे है । अब भूत प्रेत की बात करे तो यह आउटडेटेड हो गया है । औखा-सोखा इस सम यनही मिलते है । यह पुराने समय की बात हो गयी है । अभी भूत कहा है ? मेरी नजर में जो लोग नरनारायणदेव और लक्ष्मीनारायणदेव से द्रोह करने वाले थे सभी भूत है । ऐसे भूत से महाराज हम सभी को रक्षा करे । क्योकि मैने नंद संतो की वाणी एक बार हम पढे है । सत्संगि अच्छे रुप से जुडे रहते है । किस प्रकार से जुडे होते है । कोई मान से जुडा रहता है । सम्मान देने पर वह आता है । कोई प्रसाद से जुडा रहता है । कोई स्वागत से जुडा रहता है । सम्मान देने पर वह आता है । कोई प्रसाद से जुडा रहता है । कोई स्वागत से जुडा रहता है । बापू के समय की बात है । एक उंझा के सत्संगी थे । मेरे पास आकार बोले मैं तो शुद्ध नरनारायणदेव का हूँ । वही पर ठहरता हूँ । क्योकि ? मेरा कपडा धो देते है । प्रसाद देते है । इस प्रकार कई लोग जुडे है । लगभग ४० वर्ष पूर्व की बात है । लिम्बडी में ध्रांगध्रा के एक सत्संगी थे । वह एक फोटो व्यवसाय करते थे । अपने सम्प्रदाय से अलग हुए । सभी गुरुओ का चित्त रखते थे । जो ग्राहक जिस समय आने वाले होते थे । उसी के अनुसार को हो सामने लगा देते थे । व्यवसाय अच्छा चलता था । सामने वाला समझता था कि यह अपने गुरु का शिष्य है । धंधा अच्छा हो जाता ता । मेरा भी फोटो रखता था । इस प्रकार कई लोग जुडे होने के कारण, अपने तो एक मूर्ति से जुडे है । महाराज की निष्ठा से, आश्रय से जुडे है । हनुमानजी दादा से यही प्रार्थना है कि नरनारायणदेव के प्रति जो अपनी वफादारी है । इसमें कभी भी कभी नही आये ।

स्वामीने अच्छा प्रबन्ध किया है । स्वामी को मै निर्गुण स्वामी नही कहता हूँ । निर्णय स्वामी कहता हूँ । मुझे कुछ संदेह होने पर उनसे पूछ लेता हूँ । कि इसमें क्या करना है । अति विद्वान और गहरे ज्ञान वाले है । एक दूसरी बात कहूँ । जब ये पाठशाला में पढ रहे थे । उस समय से इनकी नरनारायणदेव के प्रति निष्ठा दृढ थी कि यदि मंदिर में नरनारायणदेव के प्रति द्रोह होने पर स्वामी संतो का डेलिगेशन लेकर हमारे पास आ जाते थे । यहाँ पर नरनारायणदेव की मूर्ति रखे । ऐसा करे .... सब मुझे याद है । इनके संस्कृत के गुरु दुर्गानाथ झाये । यह पुरानी याद है । इस उत्सव में जो डॉक्टरजी आये है । वे न्यूझीलेण्ड से आये है । उनकी बात करे तो यह अकेले ही न्युझीलेण्ड में मंदिर बनवाये है । मंदिर के बाद एक हाईटेक बैक्वेट हाल बनवाये है । मुझे नही लगता कि कोई और हाल ऐसा न्युझीलैण्ड में होगा । जिसका लाभ सत्संगि तथा दूसरी लोग उठाते है । वह मंदिर के लिये अपना जीवन समर्पित किये है । और सत्संगी भी पहचान वाले है । यह भाविक भाई नामासुरा गुण वाले है । समप्रदाय की अच्छी सेवा करते है । आप सभी को धन्यवाद और नरनारायणदेव के प्रति निष्ठा बढ़े ऐसी श्रीजी महाराज के चरणो में प्रार्थना है ।

प.पू. आचार्य महाराजश्री : हनुमानजी दादा के सानिध्य में बैठकर भगवान का भजन, भगवान की कथा वार्ता सुनने का लाभ मिले । अभी विश्वप्रकाश स्वामीने बात कि उस आधार पर यह दादा को बैठाये है । अयोध्याप्रसादजी दादा ने और हनुमानजी की प्रार्थना करके दैवत दिये है । हम तो यहाँ पर बालपन से बड़े हुए है । यहाँ पर पैदा हुए है । यही पर खेले है । तुफान भी किये है । यहाँ रहने पर २ से ३ बार पानी बंद हो गया था । स्नान करने के लिये हनुमानजी के पास बडी टंकी थी । वहाँ पर जाते थे ।

यह बड़ा मकान था । उसका भी एक इतिहास है । किसी को पता नही होगा । राम स्वामी ! आप को भी ज्ञात

नही होगा । रुचि लेने वाली बात है । वहाँ घर अर्थात् सबका अलग-अलग साम्राज्य होता है । एक चोर छत पर चढकर एक महीने तक छिपा रहा । दिन में नीचे आकर खा जाता था । रात्रि में छत के ऊपर सो जाता था । गलत कहे तो बापूजी से पूछ लेना । बाद में वह बोला मैं चोरी करता था । यह आता लेकिन जगह नही थी । यह पर बैठा रहता था । कुछ नही ! यह तो भगवान का दरबार है । आसरा मील जाने पर रंक राजा बन जाता है । तो चोर एक सप्ताह खाये तो कोई अवरोध नही है ? यह तो दादा का दरबार है। नरनारायणदेव के आश्रय में रहे तो हंमेशा भला और मंगल होगा । यह अचानक याद आया है । इस लिये बता दिये । वैसे इस स्थान से कई स्मरण जुडे हुए है।

मैं अपने अनुभव से कहूँ तो आँख बंद कर हनुमानजी का विचार करे । तो पूरी दुनिया में यह मूर्ति याद रह जायेगी । या मुझे ऐसा लगता होगा । मैं इसको सामान्यीकरण नही करना चाहता हूँ । किसी पर थोप दू ऐसी बात नही है । मेरा व्यक्तिगत अनुभव है । इसलिये बता रहा हूँ।

शा. स्वामी के प्रबन्ध से और संतो-हरिभक्तो के योगदान से और पुरुषार्थ से यह अच्छा कार्यक्रम पूर्ण हुआ है । यह अपनी प्रणालिका और प्रथा है । शा. स्वामी से मैने बात की थी । अपना धंधा यही है । कथा-वार्ता हो, भगवान पारायण कार्य हो । इसमें हमे आनंद मिलता है । दूसरा कार्य आता ही नही है।

अयोध्याप्रसादजी दादा ने भगवान ने शक्ति दी । वह जो स्वयं भजन-भक्ति करते थे । मैं ऐसा नही मानता कि दोनो देश में कोई आचार्य अयोध्याप्रसादजी की तरह भगवान की भजन भक्ति करते होगे । उनके काल में व्रज भाषा में असंख्य भजन है । मैं तो चमत्कार में नही विश्वास करता हूँ । लेकिन यह प्रख्यात बात है कि दादा स्वयं पूजा करने बैठे थे । तो चादर में बिच्छु बैठी थी । डंक मारा । पूजा पूरी होने के बाद बोले पार्षद देखो तो क्या है ? तो उसे कहा पीठ कर कई जगह बिच्छु ने डंक मारा है।

लेकिन बात एक ही कि मै अभी मुनि स्वामी और राम स्वामी से बात कर रहा था । कि दोनो देशो में **Maximum** कोई आचार्य जीवित रहा तो ५९ वर्ष अयोध्याप्रसाद दादाजी रहे है । अभी बड़े बापजी अधिक उम्र बाले है । वे भी आचार्य पद पर ३५ वर्ष तक ही रहे है । मैं तो बडे बापजी से कहता हूँ कि मैं जन्म लिया इस लिये आप बच गये । तनाव कम हो गया । वास्तव में सोचे तो । अहमदाबाद देश में अधिक से अधिक कोई आचार्य ५९ वर्ष से अधिक जिंदा नही रहे है । वडताल देश में ५० वर्ष से अधिक नही है । कारण तनाव का लेवल, मैनेजमेन्ट आप समझ सकते है । डॉकटर साहब । मैनेजमेन्ट का कार्य हमे सोंप देते है । अमूक स्वामीने कह किया । अमूक हरिभक्त यह किया । अमूक गाँव में ऐसा चल रहा है । मै दुःखी हो गया हूँ । मुझे ऐसा हो गया है । मेरा धंधा नही चलता है । अब उससे में क्या करु ? मेरा धंधा करो तो मै तुम्हारा धंधा करु । दूसरा नया होगा ? फिर भी उसमें से आदमी आनंद प्राप्त करना सीख जाये मनुष्य.... अभी हम आफिस में बैठे थे । एक लडका आया । मुझसे बोला, मेरे माता-पिता पूजा नही करने देते है । मैने कहा ऐसा क्यो ? कोई भगवान पारायण बने तो कोई इसका विरोध करेगा । इससे पहले संतो एवम् महंत स्वामी से अक्सर कहता है । माताजी का दीपक पहले करो । शेष बाद में बात करो । मैने कहा तुम्हे भगवान की भजन मन में कर लेना चाहिए । माताजी को दीप दिखाना तथा भजन करना । यह वास्तव में देखे तो यहाँ पर मंदिर में कृष्ण भगवान साथ खडे है । यह कौन है । माताजी नही ? शिवाजी के पीछे कौन खडा है । कोई कुछ कह दिया है । इसलिये उनका चक्कर जाम हो गया है । सर्वोपरि और **Over** सर्वोपरि, सर्वोपरी से आगे चला गया है । किसी पागल ने समझा दिया होगा कि हमें माताजी को दीपक जलाना है । इसके बाद उसने दश रुपया रखा । हमने कहा, एक कार्य करो । यह दस रुपया उठा ले जा । इसमें से सप्ताह तक दीपक जलाओ फिर वापस आना । अब पूजा करने देते है । भगवान में भेदभाव नही है । कुछ किस्से ऐसे आ जाते है । आनंद पूर्वक इसमें से निकले ।

उदाहरण के लिये **End of the day** मैं अपनी बात कहूँ तो दुनिया में जो कुछ मिला है । उसके पात्र हम

नही है । यह मेरा व्यक्तिगत मत है । हम सभी सुखी है । उसके पीछे का कारण भगवान है । यह हमेशा याद रखना है । यह लिख कर देदूँ । भगवानने वचनामृत में कहे है । भगवान में अखंड वृत्ति रखे । यह कठिन कार्य है ? इससे बडी कोई उपलब्धि भी नही है । अखंड श्रद्धा, अखंड विश्वास, अखंड स्मरण या अखंड भगवान कर्ता-हर्ता है। इस प्रकार जो मानव याद रखे उसे संसार में किसी चीज की आवश्यकता ही नही है । जो वस्तु असम्भव है । महाराज स्वयं कहे है कि कठिन-कठिन है । अर्थात् बात समाप्त है । महाराज की बाते में **Fullstop** ही आता है। कामा भी नही आता है । शिक्षापत्री पूर्ण विराम है । शिक्षापत्री का कोई श्लोक है तो पूर्ण विराम । हम घटा बढाकर मन को शांत कर सकते है । यह अलग बात है।

बात इतनी है कि हमें जो मिला है । वह भगवान की कृपा है । करुणा है । दया है कि भगवान के साथ जुडे है। इस लिये जीवन में खुशहाली है । नही तो सुखादि पडा ही रहता है । दो वक्त की रोटी भी नही मिलती । अर्थात् भगवान के ऋणी है।

अभी दो-चार हरिभक्त आये थे । बोले की कृपा करे । मै किस दिन आप से नाराज हुआ हूँ । भगवान खुश हो ऐसा काम करे । हमारे पास गुस्सा होने का समय ही नही है ? महाराज ने शिक्षापत्री लिखे है । दूसरी विवेचना भी किये है । नंद संतो ने विवेचना किये है । हम १००% पालन नही कर सकते है । आज्ञा में रह भी नही स कते है । लेकिन महाराज के वचनो के पालन करने का प्रयास करते है । प्रयत्न करना भी है । दुनिया में जीवन में **Step by Step** भगवान तरफ जाने का एक मार्ग है । **It is parts** मनुष्य की तरफ, मानव से भगत बनने की तरफ इसकी पश्चात भगवान की तरफ जाना है । इस लिये टीका लगाना पडता है । कंठी पहनना पडता है । इससे गंतव्य स्थल को भूलते नही है।

लेकिन प्रवृत्ति करते है । इतना सुंदर आयौजन करके स्वामी ने हमे कंकोत्री दी है । मुझे विचार आया कि मुझे अपने घर आना है । मुझे कंकोत्री मिली ! आनंद की बात है । सभी एकत्र हुए है । मैं आखिरी दिन पर आया लेकिन यु-ट्युब पर देखता रहता था । स्वामी ! यह यु-ट्युब में आता रहता है । दर्शन हो जाता है । अंत में हाई लाईट भी देखा । कौन आया, कौन गया, शोध कर लेता हू । हरिभक्त कौन है ? कौन-कौन आखिरी दिन हार पहनने आये थे ? लेकिन छूट देता हूँ । केवल भोजन करने आये । आप जलसा करो । कालुपुर मंदिर के कार्यालय में महंत स्वामी और मै एक बार बैठे थे । मुझसे बोले मुफ्त मे खा जाते है । मैने कहा खिलाये । कभी तो डकार आयेगी । कभी गुण बुद्धि आयेगी । ५ से १०% मुफ्त वाले रहेगे । दो जून भोजन की बापजीने गेरंटी दी है । किसीने गेरंटी दी है । सगा बाप विल करके दे कि जब तक जिंदा रहेगे । तब तक दो जून का भोजन मिलेगा । ऐसा गारंटी कोई लिखकर देगा ? यह शिक्षापत्री में लिखा है । यह शिक्षापत्री और स्वामिनारायण भगवान की महिमा इस लिये है । हमारे आश्रित महाराज आज्ञानुसार करे । तो कभी दुःखी नही होगे ।

ये पालयन्ति मनुजाः सच्छास्त्र प्रतिपादितान् ।
सदाचारान् सदा तेऽत्र परत्र च महासुखाः ॥

महाराज कुछ छोटे नही है । जो व्यक्ति कुछ भेंद नही रखा है । चाँदला करता है । माला फेरते है । ऐसा कुछ लिखा नही है । जो भी हमारी आज्ञा का पालन करेगे वे सुखी नही बल्कि महासुखी होगे । आप सोचे यह अद्भूत वस्तु है ।

यह तो एक श्लोक की बात है । मात्र इसकी व्याख्या करने जाये तो बड़े से पड़े पी.एच.डी. वाले परेशान हो जायेगे । तो भी पूरा नही होगा । सुख के पीछे दुःख होता है । महासुख के सामने कुछ नही आता है । सभी वस्तु में **Opposite** होता है । धूप है तो छाया है । सीग है तो पूछ है । संसार के अन्दर सभी को सुख मिलता है । अधिक खाने पर दुःख होता है । **Action** का **Reaction** तो होता ही है । संसार में सभी का विरोधाभास है । लेकिन महासुख का कोई विरोधाभास नही है । जिसके पास दुःख की छाया नही ऐसा सुख देगे । ऐसा महाराजने कहा है । यह सुख हमें भगवान के चरणो में मिलता है । अब दिवाली के बाद नया वर्ष आयेगा । उनसे मिलने जाना होगा । बहने समझ गयी । आप को धकेल कर ले जाती है । कहाँ जाओगे आप ? व्यवहार में बहने

पक्की होती है । ''अमुक से मिलने जाना है ।'' अभी हमे जाना अच्छा लगता है । व्यवहार में जाना पडता है । नही अच्छा लगने पर भी जाना पडता है । संसार मेईनटीनेन्स पर चलता है । मैं मानता हूँ कि भगवान मे मेइनटीनेन्स नही है । यह भगवान है । भगवान के लिये जो करे दिल खोलकर करे जिस दिन मन न कहे एक मिनट करे । यह नही लिखा है । कि आधे घंटे तक पूजा करे । मुझे तो १००-२०० माला करना है । मुक्तानदं स्वामी मूर्ख थे क्या ? वे बोलते थे । एक माला बहुत मेहनत कर पाता हू । गुरु शिखर तक जाते मन बदल जाता है । ५६ से दुगना सीना कहे । भगवान के सामने स्वीकारे की एक माला किसी तरह से पूर्ण होती है । मै तो सीना ठोक कर कहता हूँ कि ५० माला फेरते है । कुछ धुमता नही, केवल लकडी धुमती है । दिमाग धुमता है । यह स्पीकर का तार कहाँ से आया ? शा. स्वामी कब पुरा करेगे । कब खडे होगे । भोजन कब मिलेगा ? घर कब जायेगे ? शायं क्या भोजन है ? कल कहा जाना है ? डॉ. साहब चिंता कर रहे है । फ्लाईट कितने बजे की है ? **this is fact virtual** दुनिया की सत्यता है।

इस लिये मैं अपनी तरह मानती हूँ तो करना है प्रेम से करे । दिल खोलकर करे । नही तो मत करे । अधुरा करने मे आनंद नही है । यह स्थान एक ही है । जहाँ पर पूरा ध्यान दे । नरनारायणदेव का आसरा है । हनुमानदादा कि शरण हो । हमे भगवान के शरण में निष्कपट रुप से जाना चाहिए । ब्रह्मानंद स्वामी ने गाया है कि अधम उद्धारण अविनाशी तारा, विरहनी बलिहारी रे ग्रही ब्राह्मम छोडो नहि गिरधर, अविचल टेक तमारी रे, जेवो-तेवो तोय पुत्र तमारो शरण समजझु, अहंकारी रे पेट पड्य ते अवश्य पालवो वालम जुओ विचारी रे । आप विचार करे । नंद संतो ने ऐसा लिखा है । आप अधम उद्धारक है । मैं तो ना समझ हूँ । अहंकारी हूँ । स्टुपिड हूँ । इडियट हूँ । डफोण (नासमस) हूँ । हम कालर ऊँचा करके धुमते है । यह वास्तविकात है । आप को नही कर रहा हूँ । अपने लिये कह रहा हूँ । उपदेश नही दे रहा हूँ । संसार में उपदेश सुनने वाले कम है । हम सभी अवश्य है । उपदेशको को स्वयं की आवश्यकता है । हमे अपना स्वभाव स्वयं सुधारना है । विचार करे । नंद संत कितने पारदर्शी थे । यह पार दर्शिता की बात है । भगवान के समय में कितने बार दर्शक संत भगवान को ऐसा कह देते थे कि अहंकारी हूँ । स्वभाव से बेकार हो गया हूँ । लेकिन मुझे रखे । हम जब भगवान के सामने जाये । ऐसा बनने का प्रयास करना चाहिए । ऐसा मैं मानता हूँ।

हम सभी भाग्यशाली है । गर्व है । इस पवित्र भूमि में जहाँ पर अयोध्याप्रसादजी दादाने भजन किया है । इस प्रणाली में आज सुख है । देश विभाग के लोग के अन्दर जो प्रबन्ध हुई है । इसमें स्वामिनारायण भगवानने हमे नरनारायण दिये है । सर्व प्रथम अहमदाबाद में मंदिर दिये है । अयोध्याप्रसाद दादाजीने दिया है । हम उनेक सामने .... अनंत **0** अनंक **O Zero** इस के बाद **One** रखकर इसमें मैं नही आ सकता हूँ । लेकिन आज उनके आश्रय में उनके स्थान पर बैठे है । विचार करो, हंमेशा भगवान के ध्यान मे पारायण साथ रहे, घुमे, फिरे भोजन किये । उन्होने जिस भगवान की प्रतिष्ठा किये होगे । उस भगवान का दैवत कैसा होगा ? उसे न्याय देना है । हमसे भी को । भगवान को भगवान को न्याय कैसे दे सकते है ? भगवान को न्याय नही दे सकते है । हमे स्वयं न्याय करना है । नरनारायणदेव का बनकर रहे । स्वामिनारायण भगवान का बन कर रहे । कुविचार नही आये । ऐसा प्रयास करे । कुविचार नही आये । ऐसा प्रयास करे । शिक्षापत्री का समैयो का समय आ गया है । तब भगवान से जुडकर रहे। इससे बड़ी उपलब्धी नही है।

शा. स्वामी की सेवा अधिक है । कथा वार्ता का अंग है । देश-विदेश में सेवा और अहमदाबाद में महंत रहे है । दूसरी अन्य सेवा दिये है । प्रसंग नही करना है । ये तो है ही । प्रशंसा करके आभूषण बनाना खराब लगता है । ऐसी कथा वार्ता करते है । संतो का धर्म है कि कथा-वार्ता करके हरिभक्तो का पोषण करे । हरिभक्त अन्न-वस्त्र दे । संतो का ध्यान रखे । ये शिष्य बनाये है । कथा वार्ता के भाग है । राम स्वामी ज्ञान स्वामी न्युझीलैण्ड जाने वाले है। ज्ञान स्वामी का निश्चय हो गया है । डॉ. साहब कहें आप ले

जाये । कथा-वार्ता करके पोषण हो यह सत्संग महाराज के वचन है । शा. स्वामी स्थायी रुप से यह प्रबन्ध होता रहे । जब आवश्यकत पडे कह दे । चिंता नही रखे । कर ही दे । यह सब अच्छा लगता है । जितना भगवान पारायण काम होगा । वह लाभ ही है । भले लड्डू खाये । व्यवस्था हो जायेगी । फूलवडी घट जायेगी तो पुनः बन जायेगी । मेरे सामने है । उठकर बोलेता हू । लेकिन नही, सब के सामने नही । लोग बोलेगे महाराज का कुछ ठिकाना ही नही है । पास के संत-हरिभक्त जानते है । जिसे ज्ञान नही है वह भी जान जायेगा । एक ही थीयरी हमारे पास है । नजदीक आने पर कंठी टूट जायेगी या पक्की हो जायेगी । दोनो आते है । काले या सफेद रहे । ग्रे मैटर नही आज्ञा है । **Seriously** बात कर रहा हूं । गुरु बनने मे तनाव है । शांतिग्राम में बोले थे । गुरु बनने में माल नही है । भगत बनने में अच्छा लाभ है । इसके लिये प्रत्न करना है ।

सभी एकत्र हुए है । सेवा किये, लाभ लिये, अनेकानेक धन्यवाद है । संत रोज अधिक संख्या में आते थे । मैं देखता था । यहाँ से निकले तो हनुमानजी का दर्शन अवश्य करे । क्योकि महाराज का आदेश है ।

दुष्ट्वा शिवालयादीनि देवागाराणी वर्तमति ।
प्रणण्य तानि त द्रदेवदशनं कार्यमादरात् ॥

रास्ते में जाते समय शिवलाय आदि देव मंदिर आये तो दर्शन किये बना, नमस्कार किये विना सीधे नही निकलना चाहिए । रुककर आदरपूर्वक दर्शन करना चाहिए । रोड को कब्जा करने हेतु बना हो तो भारत में कई प्रकार के मंदिर होते है । रोड टूटने वाले स्थान पर शिवलिंग रखकर कह दे किये स्वयंभू देव है । ज्ञात हो कि यह प्रसादी का मंदिर है । यह नरनारायणदेव के अन्तर्गत वाला मंदिर है । यह अथेन्टिक मंदिर है । मूल सम्प्रदाय का मंदिर है । तो हमे अवश्य दर्शन करना चाहिए । दर्शन करने के बाद तुरंत भूले चले जाये । अभी दिवाली आयेगी । पाँचम तक दुःखी होकर जाना पडता है । बाद में मनमें आये तो इसी प्रकार सम्बन्ध बनता है । दिवाली में पुनः शीध्रता से मिलेगे । कुछ लोग बाहर जाते है । इन लोगो को नये वर्ष का आशीर्वाद नरनारायणदेव सभी को दे । हमारे लिये ये नये दिन ही है । राज मारे दिन-दिन दिवाली, वहेला मणता तमने वनमाली, ब्रह्मानंद नो वहालो मारे दाडे-दाडे दिवाली, मिले तब दिवाली, न मिले तो होली । जला दे । एक गाँव में गये । कुछ गाँव में आरती लेकर खडे रहते है । नये हरिभक्त होते है । नया अनुभव मिलता है । आनंद आता है । सुविकार होता है । लगाने वाले होते है । संसार में इतना कुछ जल रहा है । कम है ? यहां पर आरती प्रगट करनी है । यहाँ जैसी शांति संसार में नही है । नरनारयणदेव का सहारा है । यदि अपने लिये सुख है । सम्पत्ति है । भगवान का होकर रहे । भगवान सभी का कल्याण करे । मंगल करे । आपके परिवार का मंगल करे । ऐसा हनुमानजी दादा से प्रार्थना है । महाराज, नरनारायणदेव सभी एक ही है । खूब आशीर्वाद दे । ऐसी नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना है ।

ता. १५-१२-२०२५ श्री नरनारायणदेव देश के त्यागी पंच की मिटिंग के ठराव नं. १

शास्त्री स्वामी प्रेमस्वरुपदासजी गुरु ध्यानी स्वामी हरिस्वरुपदासजी, श्री स्वामिनारायण गुरुकुल कलोल के बारे में स्थानिक हरिभक्तो उसी प्रकार देश-विदेश के अनेक हरिभक्तो की तरफ से सम्प्रदाय के सिध्दान्त के खिलाफ चलने वाली प्रवृत्तियाँ के बारे में बार-बार शिकायत आ रही है । जिस के कारण सम्प्रदाय को तथा नरनारायणदेव देश को लांछन लग रहा है । इस विषय पर शास्त्री स्वामी प्रेमस्वरुपदासजी को कई बार लिखित जानकारी दी गयी है । इसके बाद भी उनके तरफ से संतोषपूर्ण उत्तर नही मिला । उन्होने जो देश-विदेश में जो भी सम्पत्ति या संस्था बनाये है । उसकी आज्ञा तथा आदेश कालुपुर मंदिर - आचार्य महाराजश्री या ट्रस्टी मंडल में नही लिये है । उन्होने इस विषय में कुछ बातचित या लिखकर नही दिये है । आज तक उनके कार्यप्रणाली में कोई परिवर्तन नही हुआ है । इस कारण से अब इस विषय में विचार करना नही है । शास्त्री स्वामी प्रेमस्वरुपदाजी और उनके संत-पार्षद मंडल का नाम आज से अहमदाबाद मंदिर के त्यागी पत्रक में से निकालने का प्रस्ताव कर दिया गया है । इस विषय में आगे से कार्यवाही करने के लिये त्यागी पंच द्वारा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और ट्रस्ट बोर्ड से विनंती की जा रही है ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

सभी हरिभक्तो की सुविधा के लिये
प.पू. आचार्य महाराजश्री एवम् समग्र धर्मकुल के संकल्प से अब
श्री स्वामिनारायण म्युजियम के नये स्थापना दिन
हर वर्षे दि. २९ मार्च के दिन पर मनाया जायेगा

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री यज्ञ की सूची - डिसम्बर-२५

ता. ०७-१२-२०२५ अ.नि. प.पू. शास्त्री स्वामी हरिकेशवदासजी की पुण्य स्मृति में भगवतीबा ठक्कर परिवार - वर्त. गौतमभाई ठक्कर (सेटेलाईट) प्रे. शा. स्वामी पू. हरिप्रियदासजी से-२३ गांधीनगर।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग की सूची - डिसम्बर-२५

ता. ०५-१२-२०२५ प.भ.श्री कोकिलाबेन रमेशचंद्र मारफतिया - वर्त. राजन रमेशचंद्र मारफतिया - अमेरिका।

ता. १०-१२-२०२५ प.भ.श्री प्रविण अरजणभाई हालई - केन्या

ता. १४-१२-२०२५ प.भ.श्री रोनककुमार माधवलाल पटेल (सोखडावाले - घाटलोडिया।

ता. २१-१२-२०२५ प.भ.अ.नि. निरवकुमार दिलीपभाई आदेसरा (शियालीवाले) प्रथम पुण्यतिथि पर वर्त. हियान निरवकुमार - माणेकचौक।

ता. २३-१२-२०२५ प.भ.श्री खुशी निहल कानजी हिराणी - आस्ट्रेलिया।

ता. २५-१२-२०२५ प.भ.श्री शैलेषभाई जगमोहनदास पारेख - मुंबई .

ता. २८-१२-२०२५ प.भ.श्री गोविंदभाई रामदास पटेल परिवार - डांगरवावाले - वर्त. ईलेश तथा कुणाल पटेल - थलतेज।

ता. २८-१२-२०२५ प.भ.श्री ज्ञान मृगेशकुमार पटेल - झूलासणवाले - वर्त अमेरिका।

ता. ३१-१२-२०२५ प.भ.श्री हरीशभाई नारणभाई राधवाणी - बलदिया - वर्त. लंडन यु.के.।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की सूची - डिसम्बर-२५

रू. १,२१,०००/- प.भ. डॉ. भास्करभाई व्यास - ह. प.भ. कल्पनाबेन भास्करभाई व्यास - अहमदाबाद।

रू. ५०,०००/- प.भ.अ.नि. हर्षदराय विरंचीलाल ठाकर - गांधीगनर - कठलाल - के वृद्धा पू. रामबा के वंशज, गं.स्व. कोकिलाबेन, अ.सौ. सोनल, मानव, ज्वलित, नेहा तथा निरव।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.
મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬
www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

कारतक सुद-१ प.भ. कमलेशभाई नटवरभाई (पडुस्मा), अ.नि. दिनेशभाई लालजीभाई कात्रोडीया (राजकोट), प.भ. डॉ. मनीषकुमार शांतिलाल महेता (सेठवडाला)। **कारतक सुद-३** प.भ. दक्षेशभाई रमेशभाई पटेल (उनावा), अ.नि. कानजी नारण हिराणी (गोडपर-कच्छ)। **कारतक सुद-४** प.भ. श्याम उर्विश चौधरी प्रथम जन्म दिने, प.भ. रमीलाबेन मनुभाई पटेल (पोर), प.भ. लीलाबेन हरिभाई वघासीया (माधापर-कच्छ), अ.नि. वसुमतीबेन बचुभाई सोनी (अहमदाबाद), चि. यस्वीना जन्म निमित्ते (अहमदाबाद)। **कारतक सुद-५** प.भ.अ.नि. कमलाबेन प्रहलादभाई प्रजापति (ओड), प.भ. जय महेन्द्रभाई ठक्कर (अहमदाबाद), प.भ. घनश्यामभाई रामभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. सुरेशभाई अंबालाल पटेल (झुंडाल), प.भ. नरेशभाई पचाणभाई चावडा (वघाडा), प.भ. वियान उमेशभाई रामाणी (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. पानबाई लक्ष्मण वरसाणी (मदनपर-कच्छ), प.भ. सहज हरि नीर (देवपुरा), प.भ. दिपककुमार चिमनलाल पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अमृतलाल हरिलाल राठोड (अहमदाबाद)। **कारतक सुद-६** प.भ.अ.नि. हिरजी नारण हालाई (भुज-कच्छ), एक हरिभक्त (अहमदाबाद), प.भ. अवनी निरजकुमार पटेल (डेमाई), प.भ.अ.नि. धनजी रामजी राबडीया (वाडासर-कच्छ), लुणावाडा पदयात्रा संघ, प.भ. मंजुबेन लालजी वरसाणी (मदनपुर-कच्छ), प.भ.अ.नि. वाघजीभाई माधवदास पटेल, प.भ.अ.नि. हिंमतभाई एल. पटेल (पच्छम)। **कारतक सुद-७** प.भ. जीगरभाई प्रहलादभाई पटेल (आजोल), प.भ. मित भावसार। **कारतक सुद-८** प.भ. शिवाभाई बेचरदास पटेल (विहार), प.भ.अ.नि. वाघजीभाई माधवदास पटेल, प.भ. कनुभाई काछीया (अहमदाबाद), प.भ. मधुकांतभाई फुलाभाई (अहमदाबाद)। **कारतक सुद-९** प.भ. लखीबाई केसरा (फोटडी-कच्छ), प.भ. प्रेमजी रामजी कारा (रामपर-कच्छ), प.भ. हेपीबेन मौलिककुमार हरेशभाई पटेल (धमासणा)। **कारतक सुद-१०** प.भ. केसरा रामजी (फोटडी-कच्छ), प.भ. हिरालाल माणेकलाल पाटडीया (अहमदाबाद)। **कारतक सुद-११** प.भ. आशिषभाई चंद्रकांत दोशी (अहमदाबाद)। **कारतक सुद-१२** प.भ. दर्शन महेन्द्रकुमार पाठक (अहमदाबाद), प.भ. हितेषभाई नरभेराम ठक्कर (मुद्रा-कच्छ), प.भ. कमलेशभाई बी. शाह (अहमदाबाद), प.भ. गांडाभाई जुगलदास पटेल (सोला-अहमदाबाद), प.भ. शांतिभाई नाथाभाई (जानवड), प.भ. स्वर योगेशकुमार पटेल (डांगरवा), प.भ. भारतीबेन लालभाई सोनी (अहमदाबाद), प.भ. प्रविणभाई करशनभाई पाधरा (सुखपर-कच्छ), प.भ. शारदाबेन (अहमदाबाद), धरम एक्षपोर्ट (सुरत)। **कारतक सुद-१४** प.भ. खुशाली वेदांतकुमार पटेल (अहमदाबाद), प.भ. प्रिया रविकुमार लींबाचीया (अहमदाबाद)। **कारतक सुद-१५** प.भ. प्रकाशभाई नानजीभाई पटेल (अखीयाणा), प.भ. शिवजी रत्ना पाधरा (सुखपर-कच्छ), प.भ. रूषि करशनभाई राधवाणी (अहमदाबाद), प.भ. जीतभाई रमेसभाई पूजारा (धोलका), प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर), प.भ. मेहुल जगदीश ठक्कर (मुंबई), प.भ. दिनेशभाई हरजीवनभाई पटेल (अहमदाबाद).

कारतक वद-१ प.भ. कलातीबेन न्यालचंदभाई ठक्कर (अंजार-कच्छ)। **कारतक वद-२** प.भ. स्नेहल कनुभाई टांक (बोडका-हालार), प.भ.अ.नि. जयश्रीबेन कुमुदचंद्र पटेल (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. कंकुबेन मोहनभाई (मकाखाड)। **कारतक वद-३/४** प.भ. तेजेसकुमार मगनभाई पटेल (बोदाल), प.भ.अ.नि. कालुभाई गोविंदभाई गजेरा (अहमदाबाद), प.भ. विक्रमभाई धूलाभाई पटेल (चांदखेडा)। **कारतक वद-५** प.भ. अमितभाई कांतिभाई प्रजापति (गांधीनगर), प.भ. ईन्द्रवदनभाई रावजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. मौलिन दशरथभाई पटेल (झुंडाल), प.भ. राजेशभाई नरसिंहभाई सिंगाला (निकोल), प.भ. किशोरभाई शाह (अहमदाबाद), प.भ. जय घनश्यामभाई नटवरभाई पटेल (उनावा), प.भ.अ.नि. महेन्द्रकुमार बाबुभाई गांधी (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. लक्ष्मीबेन शामजी पिंडोरीया (नारणपर-कच्छ), गं.स्व. धनबाई नारण हिराणी (मानकुवा-कच्छ)। **कारतक वद-६** प.भ. हिरलबेन रविभाई रूपारेलीया (मुंबई), प.भ. हरेश विश्राम वालाणी (बलदीया-कच्छ), प.भ. अभिषेक रमेसभाई खीचडीया (अहमदाबाद)। **कारतक वद-७** अ.नि. मूलजी करसन रूपालीया (सुखपर-कच्छ)। **कारतक वद-९** प.भ. अ.नि. धनजी देवजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. हर्ष जीतेन्द्रभाई पटेल (अहमदाबाद), अ.नि. रवजीभाई धनजीभाई वाटलीया (अहमदाबाद)। **कारतक वद-१०** प.भ. प्रविणभाई रवजीभाई मेपाणी (सुखपर-कच्छ)। **कारतक वद-१२** प.भ. धीरजभाई धनजी राबडीया (वाडासर-कच्छ), प.भ. नगीनदास के. राणा (अहमदाबाद), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारणपर-कच्छ), प.भ. दिपीकाबेन गोविंदभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. हसुमतीबेन घनश्यामभाई (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. सेजलबेन तपनकुमार पटेल (धमासणा), प.भ.अ.नि. प्रविणभाई बेचरभाई (अहमदाबाद), प.भ. सोमाणी परिवार (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. भरतभाई धनजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. जयेन्द्रभाई रमणलाल आदेसरा (अहमदाबाद), प.भ. ईशा पटेल (बामणगाम), प.भ. सतीषभाई द्वारकादास पटेल (अहमदाबाद), प.भ. डाह्याभाई मणीभाई पटेल (सोजा), प.भ. अभिषेक संजयभाई वागडीया (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. सविताबेन परसोतमभाई वेकरीया (अहमदाबाद), प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर)। **कारतक वद-१३** प.भ. शांताबेन हरिदास पटेल (धरोला), प.भ. बाबुभाई कांतिभाई पटेल (वडु), प.भ. मयंक कामदार (लीलानंद मेग्ने.) (पोरबंदर), प.भ.अ.नि. रजनीकांतभाई शांतिलाल ठक्कर (नासिक)। **कारतक वद-१४** प.भ. विश्राम मूलजी हिराणी (मानकुवा-कच्छ), प.भ. हर्षिदाबेन अशोकभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. दिपकभाई नटवरलाल मिस्त्री (बावला), प.भ. घनश्यामभाई लालजीभाई पटेल (वावोल)। **कारतक वद-३०** प.भ. मेधा निमितकुमार जानी (अहमदाबाद), अ.नि. स्वामी हरिकृष्णदासजी प.भ. योगेशभाई पटेल (गोत्री-वडोदरा), प.भ. केसरबाई लालजी हिराणी (मानकुवा-कच्छ)।

શિક્ષાપત્રી લેખનના ૨૦૦ વર્ષનો **સમૈયો** 23-1-2026 - 27-1-2026

॥ નિમંત્રણમ્ ॥

॥ શ્રી નરનારાયણ દેવ ॥

॥ શ્રી સ્વામિનારાયણ ભગવાન ॥

॥ શ્રી હરિ વિજયતે ॥

સ્વસ્તિ શ્રી દેશ દેશના ત્યાગી ગૃહી બાઈ-ભાઈ સમસ્ત સત્સંગી જોગ શ્રીનગર-અમદાવાદ મહાશુભસ્થાને બિરાજમાન ભરતખંડના અધિષ્ઠાતા શ્રી નરનારાયણ ભગવાનના ચરણકમળ સમીપથી શ્રી નરનારાયણદેવ દેશ પીઠસ્થાન થી લિખિતંગ ધર્મકુળના શુભાશિર્વાદ સહ જય સ્વામિનારાયણ વાંચશો ।

જત જણાવવાનું કે અમારા દાદા અને આપણાં ઈષ્ટદેવ ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણે સંવત ૧૮૮૨માં સમસ્ત માનવજાત માટે દીવાદાંડી રૂપ શિક્ષાપત્રી સ્વહસ્તે લખી હતી તે કલ્યાણકારી પ્રસંગને આ વર્ષે ૨૦૦ વર્ષ પૂર્ણ થઈ રહ્યા છે । તે અવસરને સંભારી રાખવા જીવનનો કલ્યાણકારી **સમૈયો** વિ.સં.૨૦૮૨ મહા સુદ-૫ તા.૨૩-૧-૨૦૨૬ ને શુક્રવાર થી મહા સુદ-૯ તા.૨૭-૧-૨૦૨૬ને મંગળવાર પર્યન્ત ભવ્યતાથી ઉજવાશે તેમાં હજારો સંતો-લાખો હરિભક્તો ભેળા મળી શ્રીજી મહારાજને પ્રસન્ન કરવા સેવા અને સત્સંગના અનેકાનેક ઉપાયો કરશે । તો **સમૈયો** નો લ્હાવો લેવા આપ સૌને પધારવા હેતે કરીને નિમંત્રણ પાઠવીએ છીએ ।

આચાર્ય મહારાજશ્રીની સાક્ષ્ય | મોટા મહારાજશ્રીની સાક્ષ્ય | લાલજી મહારાજશ્રીની સાક્ષ્ય

ધર્મકુળ પરિવાર
શ્રી નરનારાયણદેવ દેશ પીઠસ્થાન

॥ મંગલ કાર્યક્રમ ॥

તા. ૨૩-૦૧-૨૦૨૬, શુક્રવાર, મહા સુદ-૫

સ્થળ : શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર - મૂળી

સવારે ૫-૩૦	:	........મંગળા આરતી
સવારે ૫-૩૦	:	........પંચોપચાર પૂજન (યજમાનો દ્વારા)
સવારે ૬-૩૦	:	........અભિષેક (ધર્મકુળના વરદ્ હસ્તે)
સવારે ૮-૩૦	:	........શણગાર આરતી તથા અન્નકૂટ આરતી.
સવારે ૯-૦૦	:	........પ્રાસંગિક સભા
સવારે ૧૦-૩૦	:	........રંગોત્સવ

સ્થળ : મહોત્સવ સ્થળ (પર્વ ઉત્સવ ગ્રાઉન્ડ)

બપોરે ૨-૦૦ થી ૪-૦૦	:	........કથાના મુખ્ય યજમાન તથા સંહિતાપાઠના યજમાનો દ્વારા પોથીયાત્રા (પ્રભા હનુમાનજીથી)
સાંજે ૪-૦૦ થી ૪-૩૦	:	........મહોત્સવ ઉદ્‌ઘાટન વિધિ (રંગારંગ કાર્યક્રમ)
સાંજે ૪-૩૦ થી ૫-૦૦	:	........આચાર્ય સ્થાપન મંદિર, A.I. ટેકનોલોજી બેઝ થી શિક્ષાપત્રી એકઝીબીશન - પ્રદર્શન - બાળ નગરી - ઓર્ગેનિક ફૂડકોર્ટ - શિક્ષાપત્રી મંદિર - પંચદેવ મંદિર - સભા મંડપ.
સાંજે ૫-૩૦ થી ૬-૩૦	:	........દીપ પ્રાગટ્ય, કથા પ્રારંભ, વસંત પંચમી શિક્ષાપત્રી પૂજન.
સાંજે ૬-૩૦ થી ૭-૦૦	:	........પ્રાસંગિક સભા ઉદ્‌બોધન, ધર્મકુળના આશીર્વચન,
સાંજે ૭-૦૦	:	........પ્રસાદ.
રાત્રે ૮-૩૦	:	........સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમ - આદિત્ય ગઢવી.

તા. ૨૪-૦૧-૨૦૨૬, શનિવાર, મહા સુદ-૬

સ્થળ : કાલુપુર મંદિર

સવારે ૫-૩૦	:	મંગળા આરતી
સવારે ૭-૦૦	:	શણગાર આરતી
સવારે ૭-૦૦ થી ૮-૦૦	:	વાઘાના યજમાનો તથા અન્નકૂટ યજમાનો દ્વારા ઠાકોરજીનું પૂજન
સવારે ૮-૩૦	:	અન્નકૂટ આરતી.

સ્થળ : મહોત્સવ સ્થળ (પર્વ ઉત્સવ ગ્રાઉન્ડ)

સવારે ૮-૦૦	:	સ્થાપન પૂજન.
સવારે ૯-૦૦	:	કથા પ્રારંભ, - યજ્ઞશાઓળા - મહા પૂજા મંડપ - વેદશાળા - મંત્રકુટીર - મેકઈન ઈન્ડિયા - સોલર ફાર્મ - વેસ્ટ રીસાઈકલ ઉદ્‌ઘાટન વિધિ.
સવારે ૯-૧૫	:	મહા પૂજા તથા યજ્ઞ પ્રારંભ
બપોરે ૧૧-૦૦	:	પ્રાસંગિક સભા - મહેમાનશ્રીનું સ્વાગત ઉદ્‌બોધન તથા યજમાનશ્રીઓનું સન્માન.
બપોરે ૧૨-૦૦	:	મેકઈન ઈન્ડિયાના ઔદ્યોગિક સાહસવીરોનું સન્માન
બપોરે ૧૨-૩૦	:	પ્રસાદ

બપોરે ૨-૩૦ થી ૩-૩૦	:	લાઈફ સ્ટાઈલ હેલ્થ સેમીનાર
બપોરે ૩-૩૦	:	કથા પ્રારંભ.
સાંજે ૫-૩૦	:	પ્રાસંગિક સભા ઉદ્બોધન, ધર્મકુળના આશીર્વચન.
સાંજે ૭-૦૦	:	પ્રસાદ
રાત્રે ૮-૩૦	:	સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમ - અતુલ પુરોહિત (ગરબા)

તા. ૨૫-૦૧-૨૦૨૬, રવિવાર, મહા સુદ-૭

સ્થળ : કાલુપુર મંદિર

સવારે ૫-૩૦	:	મંગળા આરતી
સવારે ૭-૦૦	:	શણગાર આરતી
સવારે ૭-૦૦ થી ૮-૦૦	:	વાઘાના યજમાનો તથા અન્નકૂટ યજમાનો દ્વારા ઠાકોરજીનું પૂજન
સવારે ૮-૩૦	:	અન્નકૂટ આરતી.

સ્થળ : મહોત્સવ સ્થળ (પર્વ ઉત્સવ ગ્રાઉન્ડ)

સવારે ૮-૦૦	:	સ્થાપન પૂજન.
સવારે ૯-૦૦	:	કથા પ્રારંભ.
સવારે ૯-૧૫	:	મહા પૂજા તથા યજ્ઞ પ્રારંભ
બપોરે ૧૧-૦૦	:	દેશના સંરક્ષકોનું સન્માન (આર્મી, નેવી, એરફોર્સ, પોલીસ) - મહેમાનશ્રીનું સ્વાગત ઉદ્બોધન તથા યજમાનશ્રીઓનું સન્માન.
બપોરે ૧૨-૩૦	:	પ્રસાદ
બપોરે ૨-૩૦ થી ૩-૩૦	:	મહિલા મંચ
બપોરે ૩-૩૦	:	કથા પ્રારંભ.
સાંજે ૫-૩૦	:	પ્રાસંગિક સભા ઉદ્બોધન, ધર્મકુળના આશીર્વચન.
સાંજે ૭-૦૦	:	પ્રસાદ
રાત્રે ૮-૩૦	:	સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમ - હાર્દિક દવે

તા. ૨૬-૦૧-૨૦૨૬, સોમવાર, મહા સુદ-૮

સ્થળ : કાલુપુર મંદિર

સવારે ૫-૩૦	:	મંગળા આરતી
સવારે ૭-૦૦	:	શણગાર આરતી
સવારે ૭-૦૦ થી ૮-૦૦	:	વાઘાના યજમાનો તથા અન્નકૂટ યજમાનો દ્વારા ઠાકોરજીનું પૂજન
સવારે ૮-૩૦	:	અન્નકૂટ આરતી.

સ્થળ : મહોત્સવ સ્થળ (પર્વ ઉત્સવ ગ્રાઉન્ડ)

સવારે ૮-૦૦	:	સ્થાપન પૂજન.
સવારે ૯-૦૦	:	કથા પ્રારંભ.
સવારે ૯-૧૫	:	મહા પૂજા તથા યજ્ઞ પ્રારંભ

બપોરે ૧૧-૦૦	:	પ્રાસંગિક સભા - મહેમાનશ્રીનું સ્વાગત ઉદ્‌બોધન તથા યજમાનશ્રીઓનું સન્માન.
બપોરે ૧૨-૩૦	:	પ્રસાદ
બપોરે ૨-૩૦ થી ૩-૩૦	:	શ્રી નરનારાયણદેવ બાળ-બાલિકા મંડળ તથા શ્રી નરનારાયણદેવ યુવક-યુવતી દ્વારા સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમ (દેશ ભક્તિ અધ્યાય)
બપોરે ૩-૩૦	:	કથા પ્રારંભ.
સાંજે ૫-૩૦	:	પ્રાસંગિક સભા ઉદ્‌બોધન, ધર્મકુળના આશીર્વચન.
સાંજે ૭-૦૦	:	પ્રસાદ
રાત્રે ૮-૩૦	:	સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમ - સહજાનંદ ચરિત્રમ્ (લાઈવ શો)

તા. ૨૭-૦૧-૨૦૨૬, મંગળવાર, મહા સુદ-૯

સ્થળ : કાલુપુર મંદિર

સવારે ૫-૦૦	:	મંગળા આરતી
સવારે ૫-૩૦	:	પંચોપચાર પૂજન (યજમાનો દ્વારા)
સવારે ૬-૩૦	:	અભિષેક (ધર્મકુળના વરદ્ હસ્તે)
સવારે ૯-૩૦	:	શણગાર આરતી તથા અન્નકૂટ આરતી.

સ્થળ : મહોત્સવ સ્થળ (પર્વ ઉત્સવ ગ્રાઉન્ડ)

સવારે ૮-૦૦	:	સ્થાપન પૂજન.
સવારે ૯-૩૦	:	કથા પ્રારંભ.
બપોરે ૧૧-૦૦	:	કથા સમાપન - પ્રાસંગિક સભા - મહેમાનશ્રીનું સ્વાગત ઉદ્‌બોધન તથા યજમાનશ્રીઓનું સન્માન.
બપોરે ૧૨-૩૦	:	પ્રસાદ

મહોત્સવ સ્થળ

'પર્વ' ગ્રાઉન્ડ, પ્રભા હનુમાનજી પાસે, જમીયતપુરા, અમદાવાદ

www.swaminarayan.in info@swaminarayan.in
Daily Darshan Whatsapp no. +91 9909 967104

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "सम्मान सभी का सहारा एक का"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

जीवन में साथ का महत्व अधिक है । साथ के प्रभाव से बच नही सकते है । कुसंग रुपी पशु से वचना है । एक क्षण का 'कुसंग' सभी किये गये सत्संग पर भारी पड जाता है । किसान पूरे वर्ष फसल पर ध्यान देता है । एक वार जंगली जानवर आ जाये । तो सब कुछ नष्ट कर देता है । वह क्यो होता है ? चारो तरफ वाड नही करने पर होता है । असावधानी के कारण वर्ष भर की क्षति हो जाती है । इसी प्रकार पूरे जीवन भर सत्संग किये हो । एक क्षण का कुसंग सब कुछ मैला कर देता है । इसके बाद क्या होता है आध्यात्मिक विकास मे रुकावट होगी हम हतोत्साहित हो जाते है । क्यो हतोत्साहित होते है । जब आध्यात्मिक प्रगति में अवरोध आता है । तब लगता है कि इतना करने पर भी वह पर रह गये । ऐसा विचार ''उत्साह'' कम कर देता है । इस लिये सत्संग की अधिक रक्षा करना पडता है । अपने कमी से परिणाम खराब मिलता है । इस लिये कुसंग से दूर रहना चाहिए । कोई बिमार रहे और दवा खाये तो भी ठीक नही हो तो वह निराश हो जाता है । खीज का दवा भी नही खाता है । दवा के साथ परहेज भी करना पडता है । कुछ वस्तुओ से दूर रहना पडता है । तो दवा कार्य करती है । ईसी प्रकार हम भजन-भक्ति, साधना करे तो कुछ वस्तुओ से दूर रहना पडता है । तो लाभ मिलता है । कैसे साथ रखे ? किसका साथ रखे ? इसमें आप फ्री है । निर्णय आप का है । मान लिजिये सभा में आप आते है तो कोई हाथ पकडकर लाता है ? कि आप का आना पडेगा । आप को घर पर आराम करना है । यह कुछ खरीदने जाता है । कि यहाँ सत्संग सभा में आना है । यह निर्णय आप का है । सार विचार भी सत्संग है । सत्संग में आने की बुद्धि आये तो भगवान की आप पर कृपा है । अच्छे विचार से भगवान की तरफ अग्रसर होते है । भगवान के कृपा बिना कुछ नही होता है । हम छोटी विषय पर ध्यान नही देते है । यह करना चाहिए। सत्शास्त्र पढने पर अंदर से कोई विचार आये तो यह भगवान की कृपा है । भगवान की आप का भाव चाहिए । इससे ही भगवान खुश रहते है ।

भगवान शिक्षापत्री में आज्ञा दिये है । रास्त में आने वाले शिवालय आदि देव मंदिर को देखकर प्रणाम करना चाहिए । (श्लोक नं. २३) देवता की निंदा नही करे न सुने (श्लोक) इसी प्रकार भगवानने देवी-देवताओ सम्मान को करना बताये है । आदर और आश्रय अलग है । आदर सभी का आश्रय एक का ''भगवान अनादर करना नही सिखाये है । इसका अर्थ देवी-देवता अपने से श्रेष्ठ है । इनके पास दिव्य शक्तियाँ है । जैसे प्रतिव्रता स्त्री का भाव जो पति में होता है । वह दूसरे पुरुष में नही होता है । आदर सभी देवी-देवताआ का लेकिन 'आश्रय' नरनारणदेव का रखना है । दर्शन सभी देवताओ की करे । लेकिन निष्ठा एक देव के प्रति रहे । ऐसा नही संसार भी चाहिए । भगवान भी चाहिए । दोनो एक साथ नही हो सकता है । एक वस्तु ही रहनी चाहिए ? संसार में रहना है । तो अनन्यता कैसे रह सकती है ? ऐसा रखना की भगवान से कहना कि आप पूरी सृष्टि के निर्माता है । इस घर और संसार में आप के द्वारा मुझे जिम्मेदारी मीली है । उसे निभाने के लिये मै सक्षम हूँ । क्योकि आप मुझे बुद्धि और 'बल' दे रहे है । इसके लिये आप को धन्यवाद । मै हमेशा आप को खुश रखुगा । आप ही सनातन सत्य है । इसके अलावा कुछ

भी सत्य नही है । आप कण-कण में व्याप्त है । आप को प्रतिदिन नियम से गाते है । कि

''रे श्याम तमे साचूं नाणुं, ऐमा आवे छे ने' रे ब्रह्मा यी कीट लगी जोयु जूढ सुख जाणी रे वगोव्यु,

मुक्तानंद मन तन संग मोहू.....रे श्याम.....

स.गु. श्री मुक्तानंद स्वामी जैसे समर्थ संत जिन्हे इस सत्संग में ''माँ'' की उपाधि दी गयी है । उन्होने हम सभी को संशोधन करके बता दिया है कि कीटक से लेकर सत्य लोक में ब्रह्माजी है वहाँ तक सब कुछ देखा । किसी जगह पर सच्चा सुख नही है । महाराज के चरणो के सिवाय कही सोचना ही नही है । इस लिये प्रत्येक क्रिया में भगवान का स्मरण करना चाहिए । अखंड स्मरण अर्थात् जिम्मेदारी के साथ भगवान को भी याद रखना है । अपना आधार मजबूत नही है । हवा में तो आधार नही होता है । अखंड स्मरण ही आधार है । ''मोक्ष'' की कामना भी नही करना है ।'' अपना जीवन मुक्ति के लिये है । सतकार्य करो मोक्ष प्राप्त करने के लिये । केवल आप की कृपा प्राप्त करु । भगवान की कृपा होगी तो कुछ माँगना नही पडता है । एकवार्ता है कि एक राजा थे । उन्होने विज्ञापन किया कि कल प्रातः जो व्यक्ति सर्व प्रथम महल में आकर जिस वस्तु पर हाथ रखेगा । वह उसे मिल जायेगा । एक बच्चा आया राजा के उपर ही हाथ रख दिया । राजा तो उसके हो गये । सब कुछ राजा का बालक के प्रति आ गया । सब कुछ बच्चे की स्वयं मिल गया । इसी प्रकार जब हम नरनारायणदेव के चरण पकड लेगे तो सब कुछ स्वयं मिल जायेगा । कुछ माँगना ही नही पडेगा । भगवान के पास जैसे है । वैसे ही जाना चाहिए । सब में गुण-दोष दोनो होता है । सर्वगुण सम्पन्न मात्र भगवान ही है । भगवान सब कुछ देख रहे है । दस-पंद्रह मिनट के लिये एक जगह पर शांत होकर बैठ जाये । और इमानदारी से अपने संकल्प-विकल्प के उपर विश्लेषण करे । ऐसा आग्रह रखे कि मुझे यही विचार करना है । सहजता से जो गंदा विचार आये उसे आने दे । शेष लिखकर विचारो का विश्लेषण करे । काम, क्रोध, मोह क्या हमारे मे है ? किस कारण से मुझए ऐसा विचार आ रहा है । अपने आप को निष्ठापूर्वक रखकर दस मिनट मे आप को पत्ता चल जायेगा । आप कितने मे है ? आप के अन्दर क्या है ? बाद में भगवान से प्रार्थना करना है कि अमूक वस्तु मुझमें अक्तेध कर रही है । इसे दूर करने की मुझे शक्ति दे । भगवान के पास शक्ति माँगने में कोई रोक नही है । कितनी भी परेशानी आये धबराना नही है । आठ-आठ शस्त्र धारण करके नरनारायणदेव खडे है । इनकी शरण में हम है । भगवान तीव्र प्रारब्ध को सरल बना देते है । मात्र हमे सच्ची शरणागति स्वीकार करना है । बिल्ली के बच्चे की तरह सम्भालते है । कोई दाँत नही चुभता है । इसी दाँत से चुहा पकडकर खा जाती है । इसी प्रकार भगवान अपने शस्त्र से असुरो का नाश करते है । अपने भक्तो की रक्षा करते है । हमे ऐसा भगवान मिले है । लोग दर्शन नही कर पाते है । हम सभी आठ से दस घंटे तक इनके सानिध्य में बैठे है । वास्तव में पूरे ब्रह्मांड मे किसी को सुख नही मिला है । जो हम लोगो को मिला है । अपने जितना चाहे नरनारायणधेव के सानिध्य में बैठ सकते है । ऐसी कृपा भगवान किये है । भगवान की कृपा सागर की तरह हमेशा बहती रहती है । सागर में अगाध जल होता है । जैसा पात्र लेकर जायेगे । उतना ही आप को मिलेगा । अर्थात् जितनी पात्रता होगी । उतनी कृपा मिलेगी ।

•

विश्वास

– सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

विश्वास अर्थात् भरोसा । भरोसा अर्थात् यह बात सत्य है । ऐशी दृढ प्रतीती होनी चाहिए । विश्वास इतना के दिन कहे तो दिन रात कहे तो रात इसमें संशय नही करना चाहिए । उसी का नाम विश्वास है ।

विश्वास ऐसी शक्ति है जो मानव को जीवित रखता है । विश्वास का अभाव ही जीवन का अवसान है । भगवान

में विश्वास रखे । अपना भगवान की बातो पर विश्वास रखे पर आध्यात्मिक जीवन का विकास होता है । अविश्वास से अध्यात्म मार्ग हत्या है । विश्वास सम्भव को सम्भव बनाता है । साधना की सफलता का आधार विश्वास होता है ।

एकलव्य मिट्टी की मूर्ति में विश्वास रखा था । यह मेरे गुरु है । उसकी साधना सफल हुई । भगवान की मूर्ति न तो लकडी, पत्थर की यह विश्वास की मूर्ति है । साधक इस मूर्तियो में पूर्ण विश्वास रखकर साधना करता है । तब उसकी साधना सफल होती है । प्राचीन धर्म कहता है कि जो भगवान मे विश्वास नही करते उसे नास्तिक कहा जाता है ।

भौतिक संसार में विश्वास अति आवश्यक है । मोक्ष मार्ग मे भी विश्वास आवश्यक है । भौतिक शरीर को जिंदा रखने के लिये जैसे श्वास आवश्यक है उसी प्रकार अध्यात्म मार्ग को टिकाये रखने के लिये विश्वास अति आवश्यक है । जिसने साँस खोया । वह सब कुछ खो देता है । मोक्ष मार्ग मे जो भगवान के प्रति विश्वास हटाया । वह सब कुछ खो देता है । विश्वास ही जीवन है । अविश्वास ही मृत्यु है ।

सारंगपुर के नवे वचनामृत में श्रीजी महाराजने कहा है । कि संत का परमेश्वर का अति दृढ विश्वास होने पर कितना भी तामसी कर्म हो वह नष्ट हो जाता है । कलियुग के धर्म मिटकर सत्युग का धर्म करना लगता है । लेकिन प्रगट भगवान हो अथवा प्रगट धर्मकुल के संत हो उनके वचन में विश्वास नही आता है । मोक्ष के मार्ग मे जिसका दृढ विश्वास है । अथवा भरोसा है । वह श्रेष्ठ होता है ।

लोग १०० रुपये के ताले पर विश्वास रखते है । भगवान के उपर विश्वास नही रखते है । एक आदमी भगवान की मूर्ति के सामने बैठ कर भजन गा रहा था । ''तारो भोरोसो मने भारी'' अचानक खडा हो गया । कुछ समय बाद आकर भजन गाने लगा । ''तारो भरोसो मने भारी'' तभी बगल मे खडे व्यक्तिने पूछा कि क्यो अचानक चले गये थे । तब कीर्तन गाने वालेने कहा घर देखने गया था । ताला लगाया है कि नही । कीर्तन गाने पर भी अंदर से विश्वास नही है । विश्वास श्वास के समान बन जाने पर भगवान तभी रक्षा करते है ।

भखाडन को राम नाम पर विश्वास था । तो वह नदी पार हो गयी । कथाकार विश्वास की अच्छी व्याख्या कर रहा था । अंदर से विश्वास नही होने का कारण वह डूब गया । इसलिये निष्कुलानंद स्वामी कहते है कि भगवान के प्रति अचल भरोसा रखे । हृदय से दृढ विश्वास हो । तो उसे मृत्यु का भय नही रहता है ।

श्रीजी महाराज ने लोया के दूसरे वचनामृत में कहे है । कारियाणी के वचनामृत में इतनातेक कहे है कि कामी हो, क्रोधी हो, लम्पट जीव हो । यदि भगवान की वात पर प्रीति और विश्वास हो तो सभी विकार समाप्त हो जाता है । विश्वास करने वाला यह समझता हो । इतने बडे संत तथा भगवानने जो बात कही है । वह वैसा ही है । इसमें कोई संशय नही विश्वासु भक्त ही श्रेष्ठहै ।

विश्वासी ही श्रेष्ठ है । वचनामृत ग.अ. १४ में श्रीजी महाराज ने कहा है कि शिवानंद स्वामी प्रश्न पू छे है ? दो प्रकार के बुद्धिमान पुरुष होते है । एक परमेश्वर कहे वह बात मान लेता है । इतना विश्वास करता है । दूसरा जितना चाहता है । वही मानता है । इन दो प्रकार के भक्तो में कौन श्रेष्ठ भगत है ? इस प्रश्न के उत्तर में श्रीजी महाराज कहते है कि विश्वासी ही श्रेष्ठ है ? वे राम कथा में रामचंद्रजी ने कहा है कि मेरी प्रति जिसका दृढ विश्वास होता है । उसकी रक्षा जैसे माँ बच्चे की करती है । वैसे ही मै रक्षा करता हूँ । इस प्रकार श्रीजी महाराज का मत है । भगवान तथा संत के बचन में जो विश्वास रखता है । वे भक्त ही श्रेष्ठ है । अविश्वास साधक को साधना मार्ग में अडचन पैदा करते है । साधना करने मे उत्साह नही आता है । माला इत्यादि करने में संशय हो जाता है । यह कर रहा हूँ । मेरा कल्याण होगा की नही ऐसा होने पर मन नही लगता है । अविश्वास का

त्याग करके पूर्ण विश्वास के साथ साधना के मार्ग पर आगे बढ़ता है ।

केरिया गाँव के भाणा सगर हरिभक्त जुनागढ दर्शन करने गये । कुछ दिन रुके थे । संतो के साथ मिले । कथा वार्ता सुनकर घर वापस जाने के लिये तैयार हुए । स्वामी के पास आदेश लेने आये । स्वामी को दण्डवत प्रणाम करके बोले मैं जाना चाहता हूँ । खुश रहो । तब स्वामी ने कहा भगत घर पहुँचकर मंदिर की नाणिया साफ कर देना । वर्षा होगी । भाणा भगत को स्वामी पर अति विश्वास था । वह गांव में आकर मंदिर पर चढकर नलिया साफ करने लगे । वहाँ पर एक संत थे । बोले नलिया मत साफ करो । भाणा भगत ने कहा कि वर्षा होने पर आप को कष्ट नही होगा । भगत कहाँ वर्षा होने वाली है ? आकाश में बादल भी नही है । वर्षा नही आयेगी । भाणा भगत विश्वास के साथ नलिया साफ कर डाले । कुछ नलिया कम होगयी तो उसे घर में लाकर लगा दिये । जब काम पूर्ण हुआ तो वर्षा होने लगी । इस कारण से गुणातीतानंद स्वामी कहे कि जिसका बड़े संत पर विश्वास होगा । वह जीत जायेगे । विश्वास हो तो सभी बात माननी चाहिए ।

तुलसीदासने रामचरित्र मानस में लिखे है कि ''बिनु विश्वास भगति नहि'' ब्रह्मानदं स्वामीने भी कहा है कि ''जो होय हिम्मत रे नर ने उरमांही भारी दृढता जोईने रे तेनी मदद करे मोरारी'' । जैसे श्वास रहने पर शरीर बना रहता है । विश्वास होने पर हरि मिलते है । प्रभु में विश्वासु, हिम्मत से जीना यह सच्चा भक्त भाव है । भगवान के अलावा सब कुछ भूल जाना । केवल भगवान में खो जाना है । उसे भगवान का पाना कहते है ।

•

बद्रिकाश्रम

– लाभुबेन मनुभाी पटेल (कुंडाल-कडी)

(श्रीहरि वन विचरण गतांक से प्रारम्भ)

वर्णीराज हिमप्रदेश में वर्षाश्रुतु में जहाँ पर बर्फ की वर्षा होती है । बिजली चमकती है । राक्षस-राक्षसियो की भयंकर आवाज होती है । कही कही पर आाज आती है । इसके बीच में कष्ट है । इन सब पर विचार नही करते आगे सोच रहे है । धुमते-धुमते नरनारायणदेव के आश्रम में पहुंचे है । बड़ा सा एक बेर का वृक्ष है । उस बेर में नारियल जितने बडे बडे बेर लगे है । उसके नीचे नरनारायणदेव ऋषियो की सभा का उपदेश दे रहे है । वर्णीराज के सभा में आते ही नरनारायणदेव एकाएक खडे हो गये । ऋषि वर्ण कुटी मे से निकलकर दौडकर सभा में आसान ग्रहण किये । नरनारयणदेव की कृपा से आश्रम निर्भय है । जिसके कारण शेर, खरगोश, साँप, नेवले बैर भूलकर एक साथ खेल रहे है । प्राकृतिक सुन्दरता तथा नरनारायणदेव के सुंदर कथा का पान कर रहे है । सायं काल का समय हो गया है । लोग मशाल जला दिये है । नीरव शांति है । भक्त धाम में आनंद कर रहे है । त्यागी निष्काम रुप से तथा धर्मासृत के अनुसार धर्म पालन करने वाले । यहाँ एक उपवास के सौ उपवास करके धाम में भेजते है । तत्पश्चात परमधाम की प्राप्ति होती है । अर्थात् जिन्हे परमधाम प्राप्त करना हो । उन्हे यहाँ निष्काम होकर धाम मे जाने के लिये संकल्प करना चाहिए ।

बद्रिनाथ से बद्रिकाश्रम जाने के लिये तीरछी बरफ की नदी आती है । जिसे मानव शरीर लाँध नही कसता है । केवल संतदासजी ही स्वामिनारायण भगवान की ईच्छा से वहाँ जाया जा सकता है । श्री वर्णीराज चलकर इस जगह पर गये ते । यह नरनारायणदेव का आश्रम पावनकारी है । और ऋषि मुनि के योग्य है । और मरिच्यादिक रुपी ऋषि मुनि इस जगह पर तप कर रहे है । तप करने पर आत्मा कि शुद्धता परमधाम को प्राप्त करती है ।

नीरबैरी बनने पर वासना भंग होती है । वैरी का कल्याण नही होता है । (क्रमशः)

समैयो

के उपलक्ष्य में

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर पूनम (पोष) सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवी कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी पू. स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से प्रत्येक पूनम मनाई जाती है । सत्संग सभा इस समय माघ मास की पूनम ता. ४-१२-२०२५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ सानिध्य में हुई । जिस में यजमान एक हरिभक्त ने लाभ लिया था ।

आज की कथा के वक्ता स.गु. शा.स्वा. सुव्रतस्वरुपदासजी संगीत के मधुर ताल से भगवान की लीला चरित्र का पान कराये थे । अंत में यजमान परिवार धर्मकुल की आरती उतारे थे । तथा आशीर्वाद प्राप्त किये । सभा का संचालन स.गु.शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी ने किया था ।

(कोठारी स्वामी कालुपुर मंदिर)

विजय स्तम्भ स्थापना महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवी कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी पू. स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी तथा संत मंडल की प्रेरणा से अपने आगामी शिक्षापत्री के २०० वर्ष के ''समैयो'' का शुभारम्भ करने के लिये । परम्परापरागत विजय स्तम्भ रोपण का विजय स्तम्भ स्थापना महोत्सव ता. १४-१२-२०२५ रविवार शायं ४ बजे प्रभा हनुमानजी जमीयतपुरा पर्व ग्राउन्ड में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बडे महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री और प.प.श्री राजा के करमकलो द्वारा किया गया ।

इस अवसर पर अमदाबाद देश के छोटे-बड़े मंदिर के महंत स्वामी तथा संत हरिभगक्त पधारे थे । विद्वान संतो के प्रवचन के बाद पूरे धर्मकुल ने आशीर्वाद के साथ प्रसंग का समान किये थे । शा. स्वा. रामकृष्णदासजी सभा का संचालन सम्भाले थे । सभी संत-हरिभक्तो के लिये सुंदर प्रसाद की व्यवस्था की गयी थी । इस दिव्य प्रसंग के यजमान प.भ. रणछोडभाई विठ्ठलभाई पटेल परिवार था ।

(कोठारी स्वामी - अहमदाबाद)

"समैयो" पत्रिका लेखन

जैसे जैसे दिन बीतता गया । वैसे वैसे ''समैयो'' का उत्साह भी बढता गया । प्रत्येक सत्संगी के घर अपने प्रत्येक अवसर महोत्सव की आमंत्रण पत्रिका भेजना परम्परा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा (स्वा. अंक के सभी सदस्य) शुरु की गयी है ।

अपने आगामी शिक्षापत्री लेखन के २०० वर्ष की ''समैयो'' की आमंत्रण पत्रिका का लेखन का शुभारम्भ ता. १५-१२-२०२५ पौष सुद-११ एकादशी के शुभ दिन पर भरतखंड के राजाधिराज परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के समक्ष प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा विधिवत रुप से पूर्ण यिा गया । ठाकुरजी के सामने अनेक प्रकार के प्राकृतिक फूलो से भव्य सजावट की यी थी । इसी प्रकार प्रसादी के भव्य सभा मंडप प.पू. आचार्य महाराजश्री के पाट और पूरे सभा मंडप को प्राकूतिक फूलो से सजाया गया था । ''समैयो'' के मुख्य यजमान आज सुंदर साफा बांधकर अपने परम्परागत पोषाक में पधारे थे । सभी को धर्मकुल के करकलमो द्वारा पत्रिका दी गयी थी । आज के अवसर की सभी विधि में विशेषता तो थी । लेकिन प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञानुसार खास यह विशेषता थी । अपने सभी शिखरबद्ध मंदिर और वडताल, गढपुर, जूनागढ और धोलेरा आदि मंदिरो में स्वंय जाकर पत्रिका देगे । ऐसा सुदंर प्रबंध देखकर पूरा धर्मकुल खुश हो गया । प.पू. बड़े महाराजश्री सभी को आशीर्वाद दिये थे । तथा खुश और आनंदित हुए थे ।

स.गु. महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से उनके संत मंडल पूरी रात जागकर अच्छा प्रबन्ध किये थे । शा. राम स्वामी (कोटेश्वर) ने सुंदर रुप से सभा का संचालन किये थे । अपने प्रत्येक धामो से संत-महंत पधारे थे ।

(कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

विश्व के सर्व प्रथम अहमदाबाद कालुपुर मंदिर में धनुर्मास धुन महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी पू. स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजीकी प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में ता. १६ दिसम्बर से १४ जनवरी २०२६ तक धनुर्मास धून का महोत्सव परम्पारगत रुप से मनाया गया ।

प्रातः ५-३० से श्री रंगमहल श्री घनश्याम महाराज के सामने और प्रात ६ से ६-४५ तक साक्षात् श्री नरनारायणदेव की धून मे बैठकर सभी भक्तो पर खुश होते है। ऐसा माहोल दिखाई देता है। विशेषकर धुन में युवक अधिक दिखाई देते थे। धुन में कभी कभार प.पू. महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री पधारकर धुन बोलकर प्रोत्साहित करते थे। इसी प्रकार हवेली में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री और प.पू. बड़े गादीवालाश्री धुन में पधारते थे। प्रत्येक भक्त को ठाकुरजी का प्रसाद अच्छे बॉक्स मे दिया गया था। पूरे महीने तक धुनकरने वाले हरिभक्तो को २ किलो अडदिया के प्रसाद २ बोक्स के साथ श्री नरनारायणदेव के चित्र साथ कैलेन्डर सुंदर बैग में दिया गया था। ४ हजार जितने हरिभक्त मासिक धून के यजमान बने थे।

पूरे प्रसाद की सेवा में स.गु. भंडारी स्वामी जयप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन मे हरिभक्त पूरे मास सेवा किये थे। प्रसाद वितरण में कई हरिभक्त सेवा दिये थे। उन सभी का सभा में सम्मान किया गया था। अधिक संख्या में संत भी भाग लिये थे। संगीत, तबला, ढोलक की टीम पूरे महीने दिये थे। सभा मंडप को ध्वजा-पताका और सुदंर रोशनी से सजाया गया था।

इस धुन में ऐसा गुण होता है कि एकबार आने के बाद पूरे मास आये। इस महामंत्र धुन का यही रहस्य है। ''समैयो'' की पूर्व तैयारी के बीच पू. महंत स्वामी और मंडल के संत धुन में बैठकर ही अन्य काम पर जाते थे।)कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

शिक्षापत्री २०० वर्ष के "समैयो" के अवसर पर अहमदाबा मंदिर में चित्र स्पर्धा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवी कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् प.पू. लालजी महाराजश्री की प्रेरणा से अपने आगामी ''समायो'' के उपलक्ष्य में अनेक कार्यक्रमो मे से बालक-बालिकाओ की चित्र स्पर्धा ता. २८-१२-२०२५ रविवार के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में प्रातः ९ से १२ बजे तक किया गया था। जिस में २०० जितने बालक-बालिकाये चित्र स्पर्धा में भाग लिये थे। अपने कौशल का प्रदर्शन किये थे। अपना श्री नरनारयणदेव परिवार के प्रखर कलाकारो द्वारा निरीक्षण का कार्य किये थे। पू. महंत स्वामी के अच्छे मार्गदर्शन से कोठारी शा. स्वा. नारायणमुनिदासजीने अच्छा प्रबन्ध किया था।

सभी स्पर्धक और संरक्षक को मंदिर द्वारा प्रसाद दिया था। (प्रफुल खरसाणी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापुनगर) भोजन कराके करे प्रसादम्

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवी कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से ''समैयो'' के उपलक्ष्य में अनके प्रवृत्तियो मे से ''प्रसादम्'' भूखे के लिये भोजन वितरण के क्रमानुसार ता. ९-११-२०२५ से २३-११-२०२५ तक एप्रोच (बापुनगर) का क्रम होने से शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (महंतश्री कालुपुर) की प्रेरणा और एप्रोच मंदिर के महंत शा. स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से १५ दिन तक प्रतिदिन २१२ टिफिन जरुरतमंद भूखे लोको को प्रसाद के रुप में दिया जाता था।

रसोई विभाग में तथा वितरण में सेवा भावी भाई-बहन युवक मंडल सेवा करके कृतज्ञ हुए।

(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापुनगर) में २१२ घंटे की धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवी कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा तथा महंत शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ''समैयो'' के अवसर पर ता. २८-११-२०२५ से ७-१२-२०२५ तक अखंड २१२ घंटे की ''स्वामिनारायण'' महामंत्र धुन गायी गयी।

धुन के पूर्ण होने पर सभा के अवसर पर कालुपुर, अयोध्या, हरिद्वार, वडनगर, नाथद्वारा, नारणघाट, काकंरिया से ब्रह्मनिष्ठा संत पधारे थे। महंत स.गु.शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर) विद्वान संतो ने शुभ आशीर्वाद देकर सत्संग का पोषण किये थे। धुन में बैठने वालो के लिये भोजन प्रसाद की व्यवस्था थी।

(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी द्वारा भूखे को भोजन प्रसाद

श्री नरनारायणदेवी की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा तथा महंत स्वामी पू. स.गु. शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी (कालुपुर) की प्रेरणा से ''समैयो'' के उपलक्ष्य में कालुपुर मंदिर के आयोजन से सामाजिक सेवा के भागरुप में अपने अलग-अलग मंदिरो द्वारा क्रमश १५-१५ दिन तक प्रतिदिन २१२ भूखे लोगो को भोजन प्रसाद खिलाया गया। इसीक्रम में ता. २४-११-२५ से ८-१२-२५ तक पन्द्रह दिन तक हर्षद कोलोनी मंदिर के सेवा भाई बहनो द्वारा भोजन बनाकर श्री

नरनारयणदेव युवक मंडल और सेवा भावी हरिभक्त के सहयोग से डिस्पोजल डिसो में पैक करके प्रतिदिन २१२ जरुरत मंद व्यक्ति या जनरल अस्पताल के रोगियो को ''प्रसादम्'' का वितरण किया गया था।

प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्ष्य में ''समैयो'' के अवसर पर जेतलपुर द्विशताब्दी महोत्व के उपलक्ष्य में मात्र अपने आराध्यदेव को खुश करने के लिये । शिक्षापत्री के आज्ञाओ का पालन करके मानवता लक्षीय धार्मिक प्रवृत्तिया की गयी थी । हम सभी ने तन, मन एवम् धन और समय से जुडकर धन्यभागी बने थे । हाल में भक्तगण धनुर्मास की सुबह धुन का दिव्य लाभ लिये थे ।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोचरब पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवी कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा एवम् महंत स्वा. विश्वप्रकाशदासजी (नारणपुरा) तथा पूरे सत्संग समाज कोचरब के आयोजन से श्री स्वामिनारायण मंदिर कोचरब ता. १-१२-२५ से ५-१२-२५ के मध्य श्रीम्द सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण शा. स्वा. चंद्रप्रकाशदासजी (बिलीया महंतश्री) संगीत के सुर में कथामृत का पान कराये थे । इस अवसर पर ठाकुरजी का पाटोत्व उल्लासपूर्वक मनाया गया था । जिस के यजमान प.भ. हिरेनभाई शांतिलाल पटेल परिवार और कथा के यमजान प.भ. अ.नि. बिमलाबेन जयंतीभाई पटेल परिवार ने लाभ लिया था । जेतलपुरधाम से महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी, जयपुर महंत देव स्वामीने अच्छी व्यवस्था की थी। (कोठारीश्री - कोचरब मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अमराईवाडी का ३८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवी कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा तथा महंत शा. स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी गुरु स.गु. महंत शा. स्वामी नारायणवल्लभदासजी (कांकरिया) की प्रेरणा से कोठारीश्री और सर्व सत्संग समाज अमराईवाडी के ३८ वे वार्षिक पाटोत्सव ता. १४-१२-२०२५ के दिन ठाकुरजी का अभिषेक अन्नकूट और समैया के उपलक्ष्य में २०० मिनट का महामंत्र धुन आदि कार्यक्रम भव्यता से मनाया गया । अमराईवाडी के सभी हरिभक्त ने अलौकिक लाभ लिये थे । (शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी महंतश्री अयोध्या-वडनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर "समैयो" के उलक्ष्य में भव्य शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवी कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा और भावि प.पू. आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा कांकरिया मंदिर के महंत स.गु.शा. स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी गुरु स.गु. महंत शा. स्वामी नारायणवल्लभदासजी (अयोध्या-वडनगर) की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया रामबाग में ता. ६-१२-२०२५ के दिन शायं ६ बजे अपने भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा भव्य शाकोत्सव प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा भव्य शाकोत्सव मनाया गया था । हजारो हरिभक्त और अधिक संख्या में धामोधाम से संत पधारे थे । प्रसंगोचित सभा में अहमदाबाद, कलोल, जमीयतपुरा, सिद्धपुर, ईडर, छपैया, अयोध्या, एप्रोच, बद्रिनारायण आदि धामो-धाम से संत अपने आगामी समैयो की अनेक जानकारी दिये थे । अंत में प.पू. लालजी महाराजश्री ने आशीर्वाद दिया था । इस अवसर पर कांकरिया मंदिर के महंत स्वामी और उनके गुरु महंत स.गु. शा. स्वामी नारायणवल्लभदासजी (वडनगर), शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजीने अच्छा मार्गदर्शन दिया था।

(कोठारीश्री कांकरिया मंदिर)

प्रसादीभूत श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा भव्य शाकोत्सव और २१२ मिनट की धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवी कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा तथा महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (महंतश्री कालुपुर) की प्रेरणा से स.गु. महंत शा. स्वामी देवप्रकाशदासजी (तीर्थधाम उनवा) तथा समस्त सत्संग समाज उनावा के अच्छी व्यवस्था से महाप्रसादीभूत श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा में ता. १४-१२-२०२५ के दिन भव्य शाकोत्सव और २१२ मिनट की अखंड धून प्रातः ६-३० से १०-३० तक की गयी थी । इस अवसर पर अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी और धामो-धाम से पधारे संत शाकोत्सव का वधार करके आगामी ''समैयो'' की जानकारी दिये थे । उनावा गांव तथा आसपास के गाँव से हरिभक्तोने शाकोत्सव में भाग लेकर धन्य हो गये।

(रवि- सौमिल कांतिभाई पटेल - उनावा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा वाडज (भाईयो-बहनोका) पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के

आशीर्वाद से तथा तथा महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा वाडज समस्त सत्संग समाज - श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के अच्छे प्रबन्ध से नवा वाडज भाईयो के मंदिर का ६५ वाँ पाटोत्सव और बहनो के मंदिर का दूसरा वार्षिक पाटोत्सव ता. ३-१२-२०२५ के दिन विधिवत मनाया गया।

पाटोत्सव के अवसर पर श्री शिक्षापत्री भाष्य त्रिदिनात्मक रात्रीय पारायण स.गु.शा. स्वा. सत्यसंकल्पदासजी (नारायणघाट महंतश्री) के वक्तापद से संगीत के वातावरण में पूरा हुआ । पाटोत्सव के मुख्य यजमान नवा वाडज कृष्णनगर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, शोभायात्रा, पारायण के यजमान, अ.नि. हीरजी दादा पटेल परिवारने लाभ लिया था । धामो-धाम से संत पधाकर आशीर्वाद दिये थे । तथा साथ में मधुमेह और रक्तदान का कैम्प रखा गया था । नवा वाडज मंदिर में समैयो के उपलक्ष्य में प्रति मास के प्रति रविवार सुंदर सत्संग सभा की जाती थी । जिस में कालुपुर मंदिर से स्वामी दिव्यस्वरुपदासजी गुरु महंत स्वामी स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी संत मंडल के साथ पधारकर काथा-वार्ता का लाभ दिये थे । (स्वामी दिव्यस्वरुपदासजी गुरु महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटण (कटकियावाडो)

भगवान श्रीहरि की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदरि पाटण (कटकियावाडो) का १३६ वाँ पाटोत्सव मागसर सुद-११ ता. १-१२-२०२५ के दिन विधिवतरुप से मनाया गया । प्रात: श्रीहरिकृष्ण महाराज का अभिषेक जनमंगल होमात्मक पाठ, गीता जयंती के अवसर पर श्रीमद् भागवत पूजा आदि शा. स्वा. कुंजविहारीदासजी (सिध्धपुर-खाण महंत) हरिभक्तो का साथ प्रेरक प्रवचन दिये थे। (प्रकाशभाई सोनी - पाटण)

श्री स्वामिनारायण मंदिर आंत्रोली का १७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवी कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से अ.नि.स.गु. भंडारी दादा जानकीवल्लभदासजी पोरडा के दिव्य आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत स्वामी धर्मस्वरुपदासजी (नाथद्वारा-पोरडा) के मार्ग दर्शन से शिक्षापत्री के २०० वर्ष समैयो के उफलक्ष्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर आंत्रोली के १७ वें वार्षिक पाटोत्सव और उसके उपलक्ष्य में शिक्षापत्री भाष्य रात्रीय त्रिदिनात्मक कथा स.गु. महंत शा. स्वा. वासुदेवचरणदासजी (बद्रीनाथ महंत) के वक्ता पद से ता. ५ से ७ दिसम्बर २०२५ के मध्य अ.नि. जसुभाई जेठाभाई पटेल, अ.नि. परसोतमभाई डी. और प.भ. मनुभाई देसाईभाई पटेल परिवार यजमान पद से थे । हरिभक्त देवदर्शन, कथा श्रवण, संतो के प्रेरक वाणी का लाभ लेकर प्रसाद लेकर सभी धन्य हुए । (कोठारीश्री आंत्रोली)

श्री स्वामिनारायण मंदिर विसनगर (सोसायटी क्षेत्र) शिलान्यास एवम् शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवी कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर) तथा स.गु. शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी (महंतश्री अयोध्या) की प्रेरणा से नूतन स्वामिरायण मंदिर (सोसायटी क्षेत्रज्ञ तथा विसनगर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के अच्छे प्रबन्ध से ता. २१-१२-२०२५ के दिन नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर विसनगर (सोसायटी विस्तार) की शिलान्यास विधि और भव्य शाकोत्सव प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमरलो द्वारा शिलान्यास विधि और भव्य शाकोत्सव प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा विधिवत पूर्ण की गयी । इस अवसर पर हजारो हरिभक्त भाग लिये थे । सभा में धामोधाम से आये संतो ने समैयो की रुपरेखा के साथ प्रेरक वाणी के बाद प.पू. लालजी महाराजश्री ने आशीर्वाद दिया था । (कोठारीश्री विसनगर)

बोलल वणझर श्री स्वामिनारायण मंदिर "समैयो" के अर्न्तगत क्रिया-कलाप

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवी कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से वणझर-बोलल मंदिर के संतो हरिभक्तो द्वारा ''समैयो'' के अर्न्तगत क्रिया-कलाप प्रत्येक एकादशी को स.गु. गोपालानंद स्वामी रचित होमात्कम बीज मंत्र ता. २४-११-२०२५ वचनामृत पाठल, ता. १३-१०-२०२५ के दिन श्री स्वामिनारायण म्यूजियम में बच्चे-बच्चियो की वक्तृत्व स्पर्धा में बोपल के ३० बच्चो ने भाग लिया था । प्रत्येक रविवार को बाल सभा, प.भ. चंदूभाई जादव २०० जितने बालको को टी शर्ट भेट, ३५० बालको को प्रभाबेन मुकेशभाई ने भोजन कराया था । २६-११-२५ से ३०-११-२५ कोकिलाबेन प्रजापति ने यजमान पद से वणझर मंदिर के पाटोत्सव पर हरि स्मृति कथा, ता. १०-१२ से १४-१२-२०२५ रात्रिय कथा आदि का आयोजन ध्यानप्रिय स्वामी और धर्मसुत स्वामीने प्रेरणा दी थी। (प्रवीण उपाध्याय)

श्री स्वामिनारायण प्रार्थना मंदिर कोटेश्वर का ७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवी कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से स.गु.शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (महंतश्री कालुपुर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण प्रार्थना मंदिर कोटेश्वर का ७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव एवम् श्रीहरि स्मृति पंचान्ह पारायण स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्तापद से ता. १०-१२-२५ से १४-१२-२५ तक उल्लास पूर्वक मनायी गयी । इस अवसर पर पोथीयात्रा, ठाकुरजी का अभिषेक अन्नकूट दर्शन, कथा, संतो का दर्शन आदि कार्यक्रम किया गया था । सभा का संचालन स.गु. को.शा.स्वा. नारायणमुनिदासजीने किया था ।

(घनश्याम स्वामी - कोटेश्वर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मेऊशाकोत्सव - कथा पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवी कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. शा.स्वा. गुरुप्रसाददासजी, स.गु. शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी (महंतश्री कलोल-जमीयतपुरा) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर मेऊ में समैयो के उपलक्ष्य में ता. २८-१२-२०२५ से ता. ३०-१२-२०२५ के मध्य श्रीहरि चरित्र की कथा शा.स्वा. सच्चिदानंदजी (कालुपुर) के वक्तापद से हुई थी ।

ता. ३०-१२-२०२५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । सर्व प्रथम मेऊ मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारे थे । कथा की पूर्णाहुति आरती किये । शाकोत्कव का वधार करके सभा में विराजमान हुए थे ।

सभा में अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी, शा.स्वा. गुरुप्रसाददासजी, महंत शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी आदि धामो-धाम से संत मेऊ गाँव की महिा तथआ आनेवाले ''समैयो'' महामहोत्सव की जानकारी दिये थे ।

सभा का संचालन स.गु. महंत शा.स्वा. उत्तमचरणदासजी (कलोल)ने किया था ।

(आनंद स्वामी - जमीयतपुरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर उवारसद का १४ वाँ वार्षिक पाटोत्सव श्रीमद् भागवत पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवी कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर)की प्रेरणा से उवारसद मंदिर कोठारीश्री तथा सत्संग समाज के अच्छे प्रबन्ध से श्री स्वामिनारायण मंदिर उवारसद का १४ वाँ वार्षिक पाटोत्सव एवम् श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण स.गु.शा. स्वा. भक्तिनंदनददासजी (बावला-महंतश्री) के वक्तापद से ता. २५-१२-२०२५ से २९-१२-२०२५ तक हुई थी ।

कई हरिभक्त छोटा-बडा यजमान बनकर सेवा किये थे । पाटोत्सव के यजमान प.भ.अ.नि. जसुभाई कमाभाई पटेल परिवार और शाकोत्सव के यजमान अ.नि. मंजुलाबेन गोरधनभाई, पारायण के यजमान अ.नि. प.भ. शैलेषभाई ईश्वरभाई पटेल आदि परिवारने लाभ लिया था ।

ता. २९-१२-२०२५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । निज मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर कथा पारायण की पूर्णाहुति आरती किये । शाकोत्सव का वधार करके सभा में बैठे थे । धामोधाम से आये संत अपने दोनो उत्सवो समैयो, जेतलपुर द्विशताब्दी के बारे में बताये थे । अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्री ने आशीर्वाद दिया था । बहनो के प्रेम भरे आमंत्रण से प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारकर बहनो के मंदिर में ठाकुरजी की आरती उताकर सभा में बहनो को आशीर्वाद दिये थे । पूरे प्रसंग का संचालन स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी (जेतलपुर), ब्र. स्वा. हरिस्वरुपानंदजी, महंत स्वामी विश्वप्रकाशदासजी (नारणपुरा)ने पूरा किया था ।

सभा का संचालन शा. प्रेमप्रकाशदासजी (लालोडा) ने शोभा बढाये थे । (साधु जनमंगलदास)

शिक्षापत्री २०० वर्ष के "समैयो" के अवसर पर सत्संग सभाये परमकृपालु श्री नरनारायणधेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर) की प्रेरणा से "समैयो के अवसर पर की गयी सभाये

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर धमासणा

यहाँ के मंदिर में ता. १०-११-२०२५ को श्री स्वामिनारायण महामंत्र की २१२ मिनट की अखंड धुन की गयी थी । स्वामी सच्चिदानंद और गाँव के हरिभक्तो ने अच्छी व्यवस्था की थी । महंत स्वामी के शिष्य साधु दिव्यस्वरुपदासजी आदि संत मंडल पधारकर कथा-वार्ता का लाभ दिये थे ।

(२) श्री स्वामिनारायण मंदिर बाकरोल

श्री स्वामिनारायण मंदिर बाकरोल में २१२ मिनट की श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून ता. ४-१२-२०२५ के दिन स्वा. सच्चिदानंद और गाँव के हरिभक्तोने अच्छा प्रबन्ध किया था । साथ में शाकोत्सव भी भव्यता से मनाया गया था । दिव्यस्वरुप स्वामी (पू. महंत स्वामी के शिष्य) और संत भी कथा-वार्ता का लाभ दिये थे ।

(३) श्री स्वामिनारायण मंदिर कनीपुर

श्री स्वामिनरायण मंदिर कनीपुर का ९ वाँ वार्षिक पाटोत्सव स.गु.शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी (महंतश्री कलोल-जमीयतपुरा) की प्रेरणा से ता. २७-२८ नवम्बर २०२५ को विधिवत मनाया गया । इश अवसर पर श्रीहरि चरित्र कथा शा.स्वा. सच्चिदानंदजी के वक्ता पद से की गयी । ठाकुरजी की अन्नकूट आरती सत्संग सभा का कार्यक्रम हुआ था । स्वा. दिव्यस्वरुपदासजी (फू. महंत स्वामी के शिष्य) आदि संत मंडलने सभा को कथा-वार्ता का लाभ दिये थे ।

श्री स्वामिनारायण कष्टभंनदेव मंदिर न्यु राणीप

यहाँ श्री स्वामिनारायण मंदिर कष्टभंजनदेव न्यु राणीप तथा समस्त हरिभक्तोने श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर ता. २५-१२-२०२५ के दिन २१२ प्रदक्षिणा श्री नरनारायणदेव की किये थे । दिव्यस्वरुप स्वामी (पू. महंत स्वामी के शिष्य) मार्गदर्शक थे ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर गोमतीपुर

श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर) की प्रेरणा से गोमतीपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में धनुर्मास में पूरे सुबहर ५ से ६ श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून सभी हरिभक्त मिलकर किये । इस धुन से वातावरण भक्तिमय बन गया था ।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - गोमतीपुर)

अन्नकूट उत्सव धाम आदरज में "समैयो" प्रवृत्ति

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा बहनो की गुरु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री की आज्ञा से अपने आने वाले शिक्षापत्री के २०० वर्ष के ''समैयो'' के उपलक्ष्य में अन्नकूट उत्सव धाम आदरज महिला मंडल द्वारा २०० घर सत्संग सभा, २०० मिनट का अखंड श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून का भव्य आयोजन किया गया था । जिसमें गाँव की बहनोने भाग लिया था ।

(महंत स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी - आदरज)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा समैयो-जेतलपुरधाम द्विशताब्दी के उपलक्ष्य में अनेक क्रिया-कलाप

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा यहाँ के मंदिर के को.स्वा. विश्वप्रकाशदासजी तथा पूजारी स्वा. बालकृष्णदासजी की प्रेरणा से लालोडा मंदिर द्वारा आगामी अनपे २ महामहोत्सव ''समैयो'' और ''जेतलपुर द्विशताब्दी महोत्सव'' के अवसर पर अखंड धून, पदयात्रा, मंत्रजाप, प्रदक्षिणा और ता. २१-१२-२५ को भव्य शाकोत्सव संतो एवं हरिभक्तो की उपस्थिति में मनाया गया था । (शा. प्रेमप्रकाशदासजी - लालोडा)

"समैयो" के अवसर पर लू;वाडा गाँव मे शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी (जमीयतपुरा-कलोल) की प्रेरणा से झाडी देश के श्री नरनारायणदेव के निष्ठावान शहर लूनावाडा में अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर मे समैयो के उपलक्ष्य में ता. २७-११-२०२५ के दिन अपने भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा भव्य शाकोत्सव मनाया गया । लूनावाडा तथा इसके आसपास गांव के हजारो हरिभक्तो ने शाकोत्सव का लाभ लिया था ।

सभा में स.गु.शा.स्वा. गुरुप्रसाददासजी, शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी धामोधाम के संत ने समैया की रुपरेखा बनाते थे । शा.उत्तम स्वामी (कलोल महंतश्री) सभा का संचालन किये थे ।

अंत में प.पू. लालजी महाराजश्रीने सभी हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे । (कोठारीश्री लूनावाडा)

"समैयो" "जेतलपुर द्विशताब्दी महोत्सव" के अवसर पर महेसाणा में शाकोत्सव मनाया गया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. महंत शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम) की प्रेरणा से मेहसाणा प्रदेश के करसनपुरा, मोटप, देवरासण, मीठा, आदि गांवो से हरिभक्तो के साथ भव्य शाकोत्सव अपने आगामी जेतलपुरधाम द्विशताब्दी महोत्सव और समैयो के उपलक्ष्य में ता. २८-१२-२०२५ के दिन अपने भावि आचार्यश्री प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा भव्य शाकोत्सव मनाया गया । हजारो हरिभक्तोने शाकोत्सव का लाभ लिये थे ।

सम्पूर्ण प्रबन्ध यहां मंदिर के महंत स.गु.स्वा. विश्वप्रकाशदासजी और स.गु. स्वामी नारायणप्रसाददासजीने किया था । (कोठारीश्री मेहसाणा मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२३ में शिक्षापत्री द्विशताब्दी पर्व मनाया गया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकेशवदासजी की

दिव्य प्रेरणा से और शा.स्व. हरिप्रियदासजी के मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२३ गांधीनगर में ता. २६-१२-२०२५ से २८-१२-२०२५ तक शिक्षापत्री द्विशताब्दी पर्व अच्छे से मनाया गया। ता. २६-१२-२०२५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारकर ठाकुरजी का दर्शनक र सभा में विराजे थे। शिक्षापत्री का पूजन करके पू. शास्त्री स्वामी हरिकेशवदासजी द्वारा लिखी गयी। गीता विवेचना पुस्तक का (हिन्दी भाषा) में प.पू. महाराजश्री के करकमलो द्वारा विमोचन किया गया। हाथ से अलग करके धाम के एक बीज को अशत समैयो यज्ञ के लिये समर्पण किये थे। बच्चे-बच्चियो द्वारा शिक्षापत्री के श्लोको का श्रवण करके सभी कोई खुश होकर आशीर्वाद दिये थे । प्रेरणादायक कार्यक्रमो में शिक्षापत्री महापूजा, महाविष्णुयज्ञ, शिक्षाप्तरी शोभायात्रा, शिक्षापत्री जन कल्याण, नगर यात्रा, ७५ युवको द्वारा एक साथ तालबद्ध संकीर्तन का अद्भूत कार्यक्रम, अनेक सांस्कृतिक कार्य्करम, शिक्षापत्री संहिता पारायण, शिक्षापत्री का सुखे मेवा से पूजा, समूह निराजन भक्ति, सत्संग संस्कार शिक्षापत्री आज्ञा पालन दृढता जैसे कार्यक्रमो में हजारो हिरभक्त भाग लिये थे। शिक्षापत्री कथा सत्संग शा.स्वा. हरिप्रियदासजी के वक्तापद से कथा सुनकर हजारो भक्त धन्य हुए। (पिन्टु भगत से-२३)

श्री स्वामिनारायण मंदिर साबलवाड मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. सिध्धेश्वरदासजी (ईडर-टोरडा) की प्रेरणा से ईडर प्रदेश के साबलवाड गाँव के नये हरिमंदिर के पूर्ण होने पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करमकलो द्वारा १०-१२-२०२५ के दिन मूर्त प्रतिष्ठा विधिवत रुप से पूर्ण की गयी। इस प्रसंग पर आयोजित सभा में महंत शा.स्वा. सिध्धेश्वरदासजी, स.गु. महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर) आदि संतोने प्रेरक प्रवचन दिये थए।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभी हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे। गाँव में घर-घर शिक्षापत्री का वितरण किया गया था। (पार्षद घनश्याम भगत)

"समैयो" के उपलक्ष्य में रतनपर (ईडर) में अखंड धून

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. सिध्धेश्वरदासजी (ईडर-टोरडा) की प्रेरणा से रतनपर गाँव में आयोजित अपनी आगामी समैयो के उपलक्ष्यमें २१२ घंटे की श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून पूरे गाँव के हरिभक्तोने किया।

(पार्षद घनश्याम भगत)

"समैयो" के उपलक्ष्य में ईडर मंदिर में शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. सिध्धेश्वरदासजी की प्रेरणा से अपने आगामी महामहोत्सव समैयो के उपलक्ष्य में ता. १४-१२-२०२५ के दिन पूरे ईडर प्रदेश का संयुक्त शाकोत्सव, प,पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा उल्लासपूर्वक मनाया गया था। ५००० जितने हरिभक्तोने शाकोत्सव का लाभ लिये थे। (पार्षद घनश्याम भगत)

वडनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर धनुरमास की धून

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से ऐतिहासिक नगरी वडगनर श्री स्वामिनारायण मंदिर में १६ दिसम्बर से पूरे खरमास में श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून स.गु. महंत शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजी, कोठारी शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजी कांकरिया महंत शा. स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी के अच्छी व्यवस्था से वडनगर के सभी हरिभक्त धुन में आकर लाभ लिये थे। (नवीनभाई)

सम्प्रदाय के सर्वोपरि धाम महातीर्थधाम छपैयापुर में धनुर्मास की धून

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से सम्प्रदाय के सर्वपरि महानतीर्थधाम छपैयापुर में भयंकर ठंडी में धनुरमास में संत०हरिभ्कत प्रातः श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन में भाव विभोर हो जाते है। छपैया और आस-पास गाँवो और यात्रिको से पूरा मंदिर भर जाता है। महंत स्वामी देव स्वामी, विष्णु स्वामी, ने अच्छीव्यवस्था की थी। सभी को कैलेन्डर प्रसाद देकर खुश किया गया। (कोठारी स्वामी छपैया)

मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगनर द्विशताब्दी महोत्सव मनाया गया

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से यहाँ के मंदिर निर्माण कर्ता अ.नि. पूज्य स.गु. स्वामी श्री प्रेमजीवनदासजी की दिव्य प्रेरणा से तथा मंदिर के महंत स्वामी स.गु. नित्यप्रकाशदासजी के सुंदर मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर की द्विदशाब्दी महोत्सव ता. १-११-२०२५ से ता. ७-११-२०२५ तक मनाया गया।

उत्सव के अन्तर्गत श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण स.गु.शा. स्वा. त्यागवल्लभदासजी तथा स.गु.शा.स्वा. कृपावत्सलदासजी तथा शा.स्वा. सत्संग सागरदासजी के वक्ता पद से संगीमय वातवरण में पूरा किया गया।

इसक बाद पाँच दिन का श्रीहरि यज्ञ, अखंड धून, समूह महापूजा, राजोपचार पूजा, अन्नकूट महाभिषेक रात्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ समाज लक्षी कार्यक्रमो १२ नव युगलो का सर्वजाति विवाहमंत्र ब्राह्मण बटुको का उपनयन संस्कार विधवा बहनो को अनाज किट, झूपड पट्टी में रहने वाले परिवारो को ताहवत्री का वितरण, सर्व रोग निदान केन्द्र रक्तदान कैम्प आदि का कार्यक्रम किया गया था। शिक्षापत्री के २०० वर्ष की समैया के उपलक्ष्य में शिक्षापत्री सचित्र प्रदर्शन का सुन्दर प्रबन्ध किया गया था।

ता. १-११-२०२५ के दिन अपने भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारे थे। जिनके करकमलो के द्वारा महोत्सव का उद्घाटन विधिवतरुप से किया गया था। इस के बाद सभा में सभी को आशीर्वाद दिये थे। सभी बहनो की गुरु प.पू.अ.सौ.गादीवालाश्री सभी बहनो को आशीर्वाद दी थी। इस अवसर पर विशेष रुप से पधारी थी। ता. ७-११-२०२५ कार्तिक वद-२ की प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। निज मंदिर में पधारकर ठाकुरजी की आरती करके सभा में पधारकर सेवा देने वालो यजमानो का सम्मान करके सभा में आशीर्वाद दिये थे। धामोधाम से विशाल संख्या में संत-हरिभक्त और सांख्ययोगी माताये पधारी थी। सामाजिक तथा राजकीय अग्रणियो में सुंदर लाभ लिये थे।

अ.नि. पू.स.गु. स्वामी प्रेमजीवनदासजी की दिव्य प्रेरणा से महोत्सव के मुख्य यजमान का लाभ प.भ. प्रवीणभाई नटवरलाल पटेल (सेडला) परिवारने लिया था। कथा पारायण के मुख्य यजमान प.भ. रमेशभाई ठाकरशीभाई दलसाणिया (जासापर) परिवारने लाभ लिये थे। पूरे महोत्सव का सभा संचालन स.गु.शा.स्वा. भक्तिनंददासजी (हलवद), सगु. महंत स्वामी नित्यप्रकाशदासजीने शोभा बढाया था। पूरे महोत्व के प्रेरक स.गु. स्वामी कृष्णवल्लभदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन अनुसार स्वयं सेवको और श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के प्रेरक सेवा दी थी। महिला मंडल की सेवा भी प्रेरक थी। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

पू. देवानंद स्वामी के बलोल गाँव में धनुर्मास की धुन

जिस भूमि के उपर भगवान श्री स्वामिनारायण महाप्रभु १७ बार पधारकर पूरे गाँव तथा गाँव की भूमि को तीर्थ भूमि बनाये है। जहाँ पर अपने अष्ट कवियो में स.गु. देवानंद स्वामी का प्रागट्य हुआ था। श्री नरनारायणदेव, मूली श्री राधाकृष्णदेव का चुस्त गाँव है। यहाँ के स्वामिनारायण मंदिर में पूरे धर्नुमास हरिभक्तो ने धुन की थी। प्रतिदिन अडदिया का प्रसाद भाई-बहनो को मंदिर में दिया जाता था। गाँव के उपर पूरे धर्मकुल की असीम कृपा है। (बूटियाभाई)

SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE - KALUPUR

Information for foregin donation towards Shree Narnarayan Mandir Trust for all Satsangi, who are belongs to abroad (out side India) remit their donation to Shree Narnarayan Mandir Trust, Kalupur, Ahmedabad. Only in Our FCRA A/c. Details as under.

BANK NAME	**: STATE BANK OF INDIA**
BRANCH	**: FCRA CELL, MAIN BRANCH, SANSAD MARG, NEW DELHI-110001**
BENEFICIARY NAME	**: SHREE NARNARAYAN MANDIR TRUST**
SAVING BANK A/C. NO.	**: 401 890 15898**
IFS CODE	**: SBIN0000691**
SWIFT CODE	**: SBININBB104**
BENEFICIARY ADDREES	**: SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE, KALUPUR, AHMEDABAD, GUJARAT, INDIA**

Special instruction for remittance made through NRE Cheque in Indian Rs.-

If any donation route from abroad to NRE A/c in India (of Donor), please donate with your cheque along with copy of passport of related donor, Only afterwards their donation will be credited in above mentioned A/c only.

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and **Published From :** Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji

अहमदाबाद देश के अनेक मंदिरो में धर्मकुल के सांनिध्य में शाकोत्सव

मेऊ

ओला

मेहसाणा

धोलका

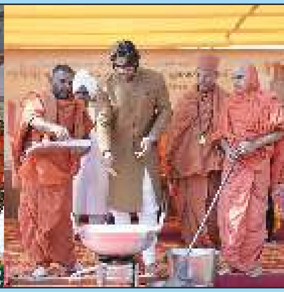
लुणावाडा

कांकरिया

विसनगर

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपर (कच्छ) पाटोत्सव के प्रसंग पर सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

समैयो के अवसर पर अहमदाबाद मंदिर में चित्र स्पर्धा में २०० कलाकारो ने भाग लिया था ।

प.पू. बडे महाराजश्री के सांनिध्य में भुज मंदिर द्वारा आयोजित शिक्षापत्री द्विशताब्दी महोत्सव का आमंत्रण पत्रिका लेखन ।

अपने अनेक मंदिरो में समैया की पत्रिका का पूरजोस स्वागत

भुज

जेतलपुर

धोलका

गांधीनगर से-२

कांकरिया

कलोल पंचवटी

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2026

एक नवीनप्रयोग : सभा मंडप में ''समैयो'' की पत्रिका लिखते संत एवम् हरिभक्तश्री ।

साबलवाड (ईडर) नये मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते
प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

अडालज नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

अहमदाबाद मंदिर में मुमुक्षुओ को
संत महा दीक्षा देते प.पू. महाराजश्री ।

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से

शिक्षापत्री लेखन २०० वर्ष का

समैयो

23-1-2026 - 27-1-2026

अध्यक्ष : प.पू. भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण मंदिर, अमदावाद गादी

स्थल :-
''पर्व'' ग्राउन्ड, प्रभा हनुमानजी मंदिर के बागल में,
जमीयतपुरा, अहमदाबाद ।

Praful Kharsani